मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

समाज का रोग

''इस्लाम एक सम्पूर्ण दीन और जीवन यापन की एक सम्पूर्ण व्यवस्था है और यह दीन अल्लाह की ओर से उतारा गया है। इसको अक़्ल पर, मसलहतों पर और किसी देश के माहौल पर नहीं छोड़ा गया वरना फिर यह होता कि भारत का इस्लाम कुछ और होता, मिस्र का कुछ और होता, सऊदी अरब का और होता और इंग्लैण्ड व अमरीका का दूसरा होता। इस्लाम के मॉडल दुनिया में अलग–अलग होते। आप आंख बन्द करके दुनिया के आख़िरी कोने तक चले जाइये, जहां मुसलमान हैं, नमाज़ का समय हो, यही नहीं कि आप वहां नमाज़ पढ़ सकते हैं बल्कि बिना किसी अवरोध के पढ़ा भी सकते हैं। यही एक दीन है जिसको गाइडबुक की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम एक आकाशीय धर्म है तथा सम्पूर्ण विश्व के लिये है। इस्लाम एक यूनिवर्सल लॉ है, जो चीज़ अच्छी है हर जगह अच्छी है। जो चीज़ बुरी है हर जगह बुरी है, जो हराम है हर जगह हराम है, ऐसा बिल्कुल नहीं है कि जो चीज़ एक जगह हराम है दूसरी जगह हलाल और जायज़ घोषित कर दी जाए।''

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

NOV 17

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

मानवीय महानता व शिष्टता की घोषणा

इस्लाम ईमान और अपनी व्यवहारिक शिक्षाओं के द्वारा एक मनुष्य के अन्दर महानता व शिष्टता की ऐसी चेतना व विवेक उत्पन्न करता है जिससे एक मुसलमान इस मामले में बहुत ही संवेदनशील हो जाता है। वह इन्सान को किसी भी हालत में जानवरों की श्रेणी में नहीं रखता और न वह उससे हैवानों जैसा व्यवहार करना पसंद करता है और न वह उन्हें अपनी निजी श्रेष्ठता व प्रधानता के लिये दास बनाता है। वह अपने और दूसरे मनुष्यों में कोई अन्तर नहीं समझता कि उससे अपमानजनक व्यवहार करे। यहां मानवीय समानता व सम्मान हेतु नमूने के रूप में केवल एक ही घटना प्रस्तुत की जाती है:

''हज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत उमर (रज़ि०) के पास थे कि उनके पास मिस्र के एक क़िब्ती ने फ़रियाद की। आपने पूछा तो उसने कहा कि अम्र बिन आस ने मिस्र में घुड़दौड़ करवायी, मेरा घोड़ा आगे निकल गया और लोगों ने इसे देखा भी, लेकिन अम्र बिन आस के बेटे मुहम्मद कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम यह मेरा घोड़ा है। वह जब क़रीब आया तो मैंने उसे पहचान कर कहा नहीं, ख़ुदा की क़सम यह मेरा घोड़ा है। इस पर वे मुझे कोड़ो से मारने लगे और कहने लगे कि जानते नहीं मैं एक सम्मानित व्यक्ति हूं। इस पर हज़रत उमर (रज़ि०) ने उससे कहा कि अच्छा बैठो! फिर अम्र बिन आस को लिखा कि मेरा ख़त देखते ही तुम और तुम्हारा बेटा मुहम्मद हाज़िर हो जाएं। बयान करने वाला कहता है कि अम्र बिन आस ने अपने बेटे को बुलाकर पूछा कि क्या तुमने कोई जुर्म किया है? उसने नहीं में जवाब दिया तो उन्होंने कहा कि तब क्यों उमर (रज़ि०) ने तुम्हारे बारे में लिखा है?इसके बाद वे हज़रत उमर (रज़ि०) के पास हाज़िर हो गये। हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि हम हज़रत उमर (रज़ि०) के ही पास थे कि अम्र बिन आस को एक लुन्गी और चादर में आते देखा तो हज़रत उमर (रज़ि०) देखने लगे कि उनका बेटा भी साथ में है या नहीं, जो उनके पीछे—पीछे आ रहा था। हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा कि मिस्री कहां है? उसने कहा कि हां मैं यहां हूं। उन्होंने कहा कि वह कोड़ा लेकर सम्मानित व्यक्ति की ख़बर लो। बयान करने वाले ने बताया कि उसने उसे अच्छी तरह मारा, फिर हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा कि अम्र के सर पर भी घुमाओ, क्योंकि उन्हीं के दम पर उसने तुम्हें मारा था। मिस्री कहने लगा कि मैं मारने वाले को मार चुका। हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा कि अगर तुम उन्हें मारते तो मैं बीच में न पड़ता जब तक कि तुम ही न उन्हें छोड़ते। फिर कहा अम्र! तुमने लोगों को कबसे गुलाम बनाया हालांकि उनकी माओं ने तो उन्हें आज़ाद जना था?फिर मिस्री से कहा कि आराम से घर जाओ, अगर कोई बात होती है तो मुझ लिखना।''

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:११ नवम्बर २०१७ ई० वर्ष:९

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

दावत–ए–इस्लामी की एक मांग.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कृपालु संदेष्टा (स०अ०).....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रसूल–ए–इन्सानियत (स०अ०).....५
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

एकेश्वरवाद क्या है?.....७
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुसाफ़िर की नमाज़.....१०
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लाम से डर कैसा?.....१२
शमसुल हक़ नदवी

रसूलुल्लाह स०अ० का राजनीतिक कौशल.....१५

इत्तेबा–ए–सुन्नत.....१८
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

सोशल मीडिया का इस्तेमाल.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com

www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

दावत–ए–इस्लामी की एक मांग

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

पश्चिमी सभ्यता की चमक–दमक ने पूरी दुनिया को अपनी लपेट में ले रखा है। पश्चिमी खोजों व अविष्कारों के साथ वे सारी ख़राबियां भी अन्तर्राष्ट्रीय सभ्यता का हिस्सा बनती चली गयीं जो आज मानवीय समाज के लिये किसी नासूर से कम नहीं है। किसी ज़माने में "विलायत" का सिक्का चलता था फिर उसकी जगह यूरोप व अमरीका ने ले ली। कुछ दहाइयों पहले जब फ्रांसीसी या बर्तानवी साम्राज्य ने दुनिया के बड़े हिस्से को अपने शिकंजे में जकड़ रखा था उस समय पश्चिमी सभ्यता के ख़िलाफ़ ज़बान से कुछ कहना जुर्म समझा जाता था। चूंकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्लामी जागरूकता पैदा हो चुकी है इसलिए अब वह स्थिति तो नहीं है जो कुछ दहाइयों पहले थी। लेकिन इसके बावजूद मुसलमानों के समाज में कुछ ऐसे दाग़–धब्बे हैं जो किसी बदनुमा दाग़ से कम नहीं। यह यूरोपियन या अमेरिकल कल्चर के प्रभाव हैं जो कुछ जानबूझ कर और बहुत कुछ अनजाने में इस्लामी समाज में प्रवेश पा गये हैं। इसमें बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो कई बार दीनदार माहौल में भी पनपने लगती हैं, जिनती तरफ़ ध्यान नहीं जाता। ग़ौर करने से अंदाज़ा होता है कि यह सारी चीज़ें भौतिकवादी स्वभाव की पैदावार हैं जो विशुद्ध रूप से पश्चिम की देन है। यूरोप का भौतिकवादी इतिहास बताता है कि वे आत्मा पर विचार करते हैं तो भी उसी भौतिकवादी दिमाग़ के साथ। अफ़सोस की बात है कि यह भौतिकवादी सोच आज मुसलमानों में भी पैदा हो गयी है। इसी का परिणाम है कि कई बार ख़ालिस दीनी कामों में भौतिकवादी विचारधारा काम करने लगती है।

आज के मैकेनिकल दौर में जबकि दीन और दीन के काम का प्रचार–प्रसार भी मैकेनिकल ढ़ंग पर किये जाने लगी है, दीन की रूह और उसके स्वभाव का समझना मुश्किल हो गया है। इस्लाम की विशेषता है कि उसने सभी दिखाई देने वाले कामों को रूह की हक़ीक़त के साथ जोड़ा है। निसंदेह प्रशासन (व्यवस्था) का इस्लाम में बहुत महत्व है। क्रमवार व व्यवस्थिक रूप से जो काम किया जाता है, वह बेहतर शक्ल में सामने आता है, मगर उसकी हैसियत एक माध्यम की है, उसकी अस्ल रूह वह अन्दरूनी जज़्बात हैं जिसके परिणामस्वरूप बड़े से बड़े आंदोलन अस्तित्व पाते है। और आन्दोलनों का इतिहास यह बताता है कि उनके पीछे किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व का हाथ है जिसकी बेचैनी ने क़ौमों को हिलाकर रख दिया है। जब तक अन्दर यह जज़्बा पैदा न किया जाए, बाहरी इंजेक्शन से बड़ा फ़ायदा नहीं मिल सकता है। हज़ार तरतीब क़ायम की जाए। बेहतर से बेहतर व्यवस्था की जाए लेकिन अगर रूह सोई हुई है तो जिस्म को धोने से क्या हासिल? ग़लती यही होती है कि इन्तिज़ाम व व्यवस्था को ही सबकुछ समझ लिया जाता है। अस्ल ज़ोर इसी पर दिया जाने लगता है, और यहीं से फूट व बिखराव का आरम्भ होता है। इस्लामी एकता के लिये व्यवस्था की जितनी अधिक आवश्यकता है, उतना ही किसी व्यवस्था विशेष पर एकता को छिन्न–भिन्न होते देखा भी गया है। और यह अधिकतर उसी समय होता है जब दीन की वास्तविकता को नज़रअंदाज़ किया गया हो। दावत के इस्लामी स्वभाव को समझने की कोशिश न की गयी हो किसी स्वभाव या विचार विशेष की उस पर छाप डाल दी गयी है। आज के अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि मुसलमानों को बिल्कुल न बांटा जाए बल्कि विशुद्ध इस्लामी स्वभाव के साथ दावत के नबवी तरीक़े से क़रीबतर रहते हुए दीन की दृढ़ता व प्रचार–प्रसार के लिये प्रयास किये जाएं ताकि उसके बेहतर परिणाम सामने आ सकें।

कृपालु संदेष्टा
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"और हमने आपको सारे जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है।" (सूरह अम्बिया: 107)

इस आयत में रसूलुल्लाह (स0अ0) को सम्बोधित करके पूरी मानवता को बता दिया गया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) को हमने विशेष रूप से समस्त संसार के लिये कृपा बनाकर भेजा है। यानि आपके कारण पूरी मानवता को लाभ पहुंच रहा है। जो मुसलमान हो गये उन्हें इस प्रकार कि वे अल्लाह वाले हो गये और जो नहीं हुए उनको इस भांति पहुंच रहा है कि जीवन यापन का मार्ग उन्हें मिल गया है। इसलिए कि यह धर्ममाग्र पूर्णतयः व्यापक है और मानवजीवन को पूर्ण रूप से अपने में समाहित किये हुए है। इसमें जीवन के समस्त भागों और पहलुओं का ध्यान रखा गया है, वरना दूसरे धर्मों में उपासना तक बात समाप्त हो जाती है। उसमें ईश्वर की उपासना के बाद जो चाहो करो। जीवन के दूसरे पहलुओं के बारे में उनके यहां कोई मार्गदर्शन नहीं है। मनुष्य को बिल्कुल आज़ाद छोड़ दिया गया है कि तुम अपनी अक़्ल से समस्या का हल निकाल लो, लेकिन कोई नसीहत नहीं है, यदि किसी को उन नसीहतों से लाभ उठाना है तो केवल इस्लाम में हैं, इसमें जीवन के हर हिस्से के लिये हिदायतें हैं और केवल हिदायत ही नहीं हैं, बल्कि उन हिदायतों पर अमल भी होता है, जिसके परिणामस्वरूप समाज उन्नति करता है और यदि इसमें कोई सुस्ती होती है तो अल्लाह का क़ानून यह है कि इस उम्मत (समुदाय) में हर युग में इतने सुधारक होते रहे हैं कि उनको गिना नहीं जा सकता है, यह इसलिए हुआ है कि ताकि मानवीय परिस्थितियां सुधरी रहें और समाज में सुधार का श्रेष्ठ नमूना बन सकें।

इस्लामी धर्म की यह स्वभाविक व्यवस्था है कि जिसको देखकर ग़ैरमुस्लिमों को असाधारण फ़ायदा पहुंच रहा है। मानों यदि इस ज़मीन पर मुसलमान न होते तो ग़ैरमुस्लिमों की हालत और अधिक ख़राब होती। यह बात बिना किसी संदेह के कही जा सकती है कि उनमें बहुत सी अच्छाइयां मुसलमानों के साथ से ही आयी हैं। वे इस्लाम तो न लाए लेकिन इस्लामी शिक्षाओं से प्रभावित अवश्य हुए।

इस्लाम आने से पहले स्वयं हमारे देश का हाल यह था कि यहां के लोग नंगे रहते थे, वे एक चादर लपेट लेते और एक कपड़ा लपेट लेते और रहबानियत में लगे रहते थे। अपनी ज़िन्दगी जानवरों की तरह गुज़ारते थे। उनके यहां खाने का भी कोई सलीक़ा न था, इसीलिए जब इस्लामी तहज़ीब को उन्होंने देखा तो उन्होंने बहुत सी बातें मुसलमानों से सीखीं, जिससे ख़ुद ब ख़ुद यह नतीजा निकलता है कि इस्लाम ने मुसलमानों को फ़ायदा पहुंचाने के साथ ग़ैरमुस्लिमों को भी बेतहाशा फ़ायदा पहुंचाया है।

यूरोप की हालत पढ़े तो मालूम होगा कि जब इस्लाम आया, उस वक़्त उसकी हालत निहायत ,ख़राब थी। वहां इल्म को जुर्म समझा जाता था। कोई तालीम हासिल नहीं कर सकता था। हुसूले इल्म पर बाक़ायदा सज़ा होती थी। सइलिए कि उनके जो पादरी होते थे उनका तसल्लुत था। बादशाह भी उनकी बात मानने पर मजबूर था। अगर

कोई इल्म की बात करता तो उसको सज़ा होती थी। कई लोगों को इसी बात पर फ़ांसी दी गयी। इसी तरह उनके यहां इलाज का भी कोई नज़्म न था। जादू, टोटके और अमलियात ही से वे इलाज करते थे। दवाओं का उनके यहां कोई तसव्वुर न था। बिल्कुल जानवरों वाली ज़िन्दगी थी, लेकिन मुसलमानों ने उनमें इल्म का शउर पैदा किया, जिसको मुत्तफ़िक़ा तौर पर सब ही मानते है और वो तहज़ीब व तमद्दुन से आशना हुए।

ग़रज़ कि इस्लाम के आने से और हुज़ूर (स0अ0) के उम्मतियों से सारी दुनिया को फ़ायदा पहुंचा। उस वक़्त हम और आप दुनिया में जो ख़ैर देख रहे हैं यह मुसलमानों और इस्लाम ही की बरकत है। अगरचे समझा यह जाता है कि यूरोप की देन है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि उन्होंने खुद सबकुछ मुसलमानों ही से सीखा है। सोहबत से ग़ैरमामूली असर पड़ता है। अगर आप नेक आदमी की सोहबत में रहेंगे तो आप उसकी नेकियां सीखेंगे और बुरे आदमी की सोहबत में रहेंगे तो बुराइयां सीखेंगे। तो मुसलमानों की सोहबत और उनके असर से जो ग़ैरमुस्लिमों को फ़ायदा पहुंचा उसकी वजह से उनमें तहज़ीब आ गयी। इसलिए पहले वे शाइस्ता न थे। वे जानवरों वाली ज़िन्दगी गुज़ारते थे। इल्म को बुरा समझते थे, लेकिन इस्लाम के बाद उनके तमाम नज़रिये बदल गये।

मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की आमद सारी कायनात व सारे आलमों के लिये रहमत का ज़रिया बनी। मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी एक बार इसी मौज़ू को अपनी सीरत की एक तक़रीर में बयान कर रहे थे चुनान्चे उन्होंने अपनी तक़रीर में एक पुरलुत्फ़ कैफ़ियत के साथ यह भी फ़रमाया कि हुज़ूर (स0अ0) की रहमत का नतीजा है कि आज यह लाउडस्पीकर हमारे सामने है। इससे हम आवाज़ को तेज़ कर सकते हैं। अगर हुज़ूर (स0अ0) की तालीमात न आयी होती और मुसल3मानों की तहज़ीब और उनकी शाइस्तगी और दीनदारी लोगों के सामने न आती तो दुनिया तरक़्क़ी की इन मनाज़िल से कभी भी हमकिनार न होती।

मुसलमानों का जो इल्म से ताल्लुक़ रहा है। वह ग़ैरमामूली है। मौजूदा दौर में जो ग़ैरों के यहां इल्म की रमक़ नज़र आती है यह सब ग़ैरों ने मुसलमानों ही से सीखा है, चाहे वे न माने लेकिन तारीख बताती है कि उनके पास कुछ न था, जब इल्म ही नहीं था तो क्या था। अब जो सारी इजादात आ रही हैं, गरचे कहने को उनकी हैं लेकिन सवाल यह है कि उनको शउर कहां से पैदा हुआ। लामोहाला इस बात सका जवाब यही होगा कि यह शउर मुसलमानों ही से उनमें आया। इल्म की तरफ़ तवज्जो करने और तालीम हासिल करने का जज़्बा यह सब उन्होंने मुसलमानों ही से सीखा और उसमें तरक़्क़ी करते चले गये। और मुसलमान उसमें ग़फ़लत करने लगे तो पीछे चले गये लेकिन सीखा इन्होंने मुसलमानों से ही।

ग़रज़ की इस वक़्त जो कुछ भी हम और आप इस दुनिया में अच्छी बात या अच्छा निज़ाम देख रहे हैं यह अक्सर वह है जो हुज़ूर (स0अ0) की बेअसत का नतीजा है। और मज़कूरा आयत में इन्हीं तमाम हक़ाएक़ की तरफ़ रोशनी डालते हुए फ़रमाया गया है कि हमने आप (स0अ0) को सारे आलमो के लिये रहमत बनाकर भेजा है। यह कोई मामूली जुम्ला नहीं है। इसको यूं समझें कि आप (स0अ0) बेसतर से पूरी दुनिया संभल गयी। इसमें माकूलियत आ गयी। दुनिया के लोग जानवर बने हुए थे। आप (स0अ0) ने उनको इन्सान बना दिया। बस यह एक कसर रह गयी कि वे मुसलमान भी बन जाते, शरीअत पर पूरी तरह अमल करने लगते, अलबत्ता शाइस्तगी और माकूलियत और ख़ैर की तमाम चीज़ों को मुसलमानों से ही हासिल किया।

रसूल–ए–इन्सानियत

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ात में इन्सान को अशरफ़ किया और इन्सानों में अम्बिया का इन्तिख़ाब किया और अम्बिया व मुरसलीन में रसूलुल्लाह (स0अ0) को मुमताज़ किया और ख़ातुमन्नबियीन बनाया, रहमतुल लिल आलमीन बनाया और सैयद वल्दे आदम बनाकर क़यामत तक के लिये ऐलाने इमामत फ़रमा दिया। अब कोई नबी नहीं आयेगा। जो दावा करेगा वह झूठा और कज़्ज़ाब होगा। इसीलिए इसका इन्तिज़ाम कर दिया गया कि कुरआन मजीद बाक़ी रहेगा। नूर बिखरता रहेगा और रसूलुल्लाह (स0अ0) की सीरत और तालीमात भी रहेगी और नूरानी फ़िज़ा क़ायम करती रहेगी। ज़माने के तक़ाज़ों का ख़्याल करते हुए दोनों को इन्सानियत के सामने पेश किया जाता रहेगा। जिस ज़माने में जिस उस्लूब में पेश करने की ज़रूरत होगी। ऐसे साहबे दिल व साहबे क़लम पैदा होते रहेगे जो इन दोनों के नूर से रोशनी फैलाते रहेंगे।

अल्लाह तआला की तरफ़ से अता करदा यह दो नूर ऐसे हैं कि इनसे निस्बत जोड़ने वाला हर शख़्स महफ़ूज़ होगा, महबूब होगा, उसका मक़ाम बलन्द होगा, इसलिए कि कुरआन मजीद अल्लाह तआला का कलाम है। उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी रब्बुल आलमीन ने अपने ज़िम्मे ली है और नबी (स0अ0) की ज़िन्दगी कुरआन मजीद की अमली तफ़सीर है। लिहाज़ा जो शख़्स इन दोनों से अपना ताल्लुक़ मज़बूत करेगा गोया वह भी रब्बुल आलमीन की हिफ़ाज़त के हिसार में महफ़ूज़ हो जाएगा।

तमाम अम्बियाए किराम में हुज़ूर अकरम (स0अ0) की ज़ात वाला सिफ़ात को यह इम्तियाज़ हासिल है कि आपकी एक–एक अदा महफ़ूज़ है, आपकी एक–एक बात महफ़ूज़ है, आपकी एक–एक चीज़ महफ़ूज़ है, अगर कोई उनकी चीज़ों में तब्दीली करना चाहे तो भी नहीं कर सकता। दुनिया के तमाम दानिशवरान भी मिलकर यह फ़ैसला करना चाहें कि हम सुन्नते नबवी (स0अ0) को (नऊज़बिल्लाह) बदल डालेंगे तब भी सुन्नत वही रहेगी या बाज़ नयी चीज़ों की फेहरिस्त भी सुन्नते नबवी में शामिल करना चाहें तो भी यह नामुमकिन है। सुन्नत वही काम होगा, जिसको अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने निस्बत हासिल हो। मसलन आप (स0अ0) ने मिस्वाक की वह सुन्नत हो गयी, टख़ने से ऊपर पायजामा सुन्नत बताया तो वह मसनून अमल हुआ। अब अगर सारी दुनिया भी टखने से नीचे पैजामा कराए तो सुन्नत नहीं बदल सकती। सुन्नत अपनी जगह उसी सूरत में क़ायम रहेगी। इसमें कोई फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं है। इसलिए कि यह अल्लाह के नबी की सुन्नत है और आप स0अ0 अल्लाह के महबूब व मक़बूल नबी हैं। और यह नबी मामूली नहीं है बल्कि ऐसे हैं कि ज़र्रा–ज़र्रा इनसे मुहब्बत करता है। पत्ता–पत्ता इनसे मुहब्बत करता है। एक–एक शजर व हजर इनसे मुहब्बत करता है। क्योंकि आप (स0अ0) की ज़ाते अक़दस ही से हर एक को नई ज़िन्दगी नसीब हुई है।

आज दुनिया में जहां भी ख़ैर है वह हक़ीक़त में रसूल पाक (स0अ0) के वास्ते से है। जो कुछ भी है वह आपका है। इसलिए आपकी सुन्नत को कोई नहीं बदल सकता। आपकी सुन्नत यकसां तौर पर तमाम आलम में यूं ही चमकती रहेगी। आप मराकश से मलेशिया तक चले जाएं तब भी आपको सुन्नत में कोई बदलाव नहीं मिलेगी। लेकिन जो सुन्नत नहीं है वह हर जगह बदलती रहती है। रंग बिरंगी होती है। बंगाल की अलग, कश्मीर की अलग और पंजाब की अलग।

तमाम इन्सानियत पर अल्लाह के रसूल (स0अ0) का यह एक अज़ीम एहसान है कि आप (स0अ0) ने सारे इन्सानों को एक रंग में ढाल दिया। एक लड़ी में पिरो दिया और सबके अन्दर भाई चारा पैदा फ़रमा

दिया। सबके अन्दर मुहब्बत पैदा फ़रमा दी। अब जिसके अन्दर मुहब्बत है और उसकी ज़बान पाक है उसको रसूले पाक (स0अ0) से निस्बत हासिल है और जिसकी ज़बान गंदी है और जिसकी ज़बान पर गंदे अल्फ़ाज़ हैं और जो खुद गंदा है उसको रसूलुल्लाह (स0अ0) से निस्बत हासिल हो ही नहीं सकती। और जब उनसे निस्बत नहीं हासिल हो सकती तो वह न सुकून हासिल कर सकता है न वह इत्मिनान हासिल कर सकता है, न उसको कभी खुशी मिल कसती है, न उसको कभी शादमानी हासिल हो सकती है। इसलिए कि ऐसे लोगों से खुशी रूठी रहती है। और वे उसको हर समय मनाने की चिन्ता रकते रहते हैं। ऐसे लोग जश्न और खुशी तो मनाते ही रहते हैं क्योंकि उनसे खुशी रूठी रहती है।

लेकिन जिनको अल्लाह के रसूल (स0अ0) से निस्बत हासिल होती है उनकी हर वक़्त खुशी ही खुशी रहती है। उनको हर वक़्त लज़्ज़त व मज़ा आता रहता है। क्योंकि हर आन वे अल्लाह के रसूल (स0अ0) की बातों पर अमल करते रहते हैं और उनकी सुन्नतों पर अमल पैरा होते हैं। जब अमलपैरा होते हैं तो सारी कायनात की दुआएं उन्हें हासिल हो जाती हैं, ज़ाहिर है कि ऐसे आदमी को खुशी हासिल होना यक़ीनी बात है जो शख़्स सुन्नत पर अमल करता है सारी कायनात उसको मरहबा कहती है। और उस मरहबा कहने की वजह से उसके अन्दर एक शादमानी और मसर्रत पैदा हो जाती है और जो सुन्नत के खिलाफ़ करता है तो सारी कायनात की हर तरफ़ से फटकार बरसाई जाती है कि उस पर लानत हो, फिटकार हो यह आल्लाह के रसूल (स0अ0) का बाग़ी है, दुश्मन है। यह नाम तो उन्हीं का लेता है लेकिन दुश्मने रसूल है। और अल्लाह के रसूल (स0अ0) को यह तकलीफ़ पहुंचा रहा है और जो अल्लाह के रसूल (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाये उसका मसीहा कौन हो सकता है। अल्लाह के रसूल (स0अ0) की शान इतनी बुलन्द है कि अगर कोई भूले से, ख़ता से लाइल्मी में भी कोई तकलीफ़ दे बात कह दे तो क़ाबिले मुआख़ज़ा है।

इसीलिए फ़रमाया गया कि जब रसूले पाक (स0अ0) का नाम नामी इसमे गिरमे लिया जाए तो बहुत अदब से दरूद शरीफ़ "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" पढ़े। जब भी आप (स0अ0) का नाम नामी आये तो बिना "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" के किसी साहिबे ईमान को ख़ामोश नहीं बैठना चाहिए। इससे एक निस्बत हासिल होती है। आप (स0अ0) ने फ़रमाया जो मुझपर एक बार दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। इससे अंदाज़ा लगाइये कि दस गुना सवाब सीधा–सीधा है। और ज़ाहिर है जो शख़्स रसूलुल्लाह (स0अ0) के बताए हुए दुरूद व सलाम को पढ़ेगा, उस पर उतना ही अच्छा अज्र भी हासिल होगा।

ग़रज़ कि अगर यह दो निस्बतें (कुरआन व सुन्नत) किसी को हासिल हो जाएं तो वह महफ़ूज़ हो जाता है। जो शख़्स भी कुरआन करीम से ताल्लुक़ क़ायम करेगा और रसूले पाक (स0अ0) की ज़ात से ताल्लुक़ क़ायम करेगा उसको कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। कोई उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता, कोई उसको नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। और अगर कोई नुक़सान पहुंचाना चाहेगा तो अल्लाह तआला उसको नुक़सान पहुंचाएगा और अगर अल्लाह तआला उससे बदला लेगा। इसलिए कि वह अल्लाह और उसके रसूल की निस्बत से महबूब बनाया गया है। अल्लाह का फ़रमान है कि तुम मेरे महबूब नबी (स0अ0) की चाल चलो तो महबूब इलाही बन जाओगे। ज़ाहिर है जो महबूबे इलाही बन जाए उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। मौजूदा दौर में जो उम्मते मुस्लिमा की हैसियत से हमारे अन्दर कमज़ोरी नज़र आ रही है वाक़्या यह है कि यह कमज़ोरी इसी ताल्लुक़ के कमज़ोर पड़ने के सबब है। अगर हमारी निस्बत आप (स0अ0) से कवी होती तो हम महबूबे इलाही होते। और हमारी तरफ़ कोई भी बुरी निगाह डालने की जुर्रत न करता। .....शेष पेज 9 पर

क्रमवार:

एकेश्वरवाद क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मिनहज–ए–दावत: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह स0अ0 ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 को यमन भेजा तो उनसे फ़रमाया: तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं, अतः तुम उनको सबसे पहले खुदा को एक मानने की दावत देना। जब वे इसको समझ लें तो उनको बताना कि अल्लाह तआला ने दिन–रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं।

मदीना मुनव्वरा आने के बाद जब परिस्थितियां ठीक हो गयीं तो जहां–जहां से मांग आयीं और जहां–जहां से आप स0अ0 ने आवश्यकता महसूस की उन इलाक़ों में सहाबा किराम को भेजा और जाने वालों को आप स0अ0 ने वहां के हालात के एतबार से नसीहतें भी कीं। ऊपर दी गयी हदीस जो कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी है, इसमें हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 के यमन भेजे जाने का तज़किरा है। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 जलीलुलक़द्र सहाबी हैं। उनके बारे में खुद आप स0अ0 ने यह बात इरशाद फ़रमायई कि यह हलाल व हराम के सबसे ज़यादा जानने वाले हैं। आप स0अ ने उनको यमन भेजा था जिस वक़्त वह तशरीफ़ ले जा रहे थे, उस वक़्त आप स0अ0 ने उनसे नसीहत के तौर पर यह बात कही कि तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो किताब वाले हैं और किताब वालों का मसला यह है कि वे शिर्क में पड़ चुके हैं, इसलिए आप स0अ0 ने फ़रमाया कि सबसे पहला मरहला तो यह है कि तुम उनको तौहीद की दावत देना, तौहीद की तरफ़ बुलाना जो हर चीज़ की बुनियाद है, अक़ीदे की बुनियाद है, और उसके बाद आमाल की बुनियाद भी है।

दावत का पहला चरण: आप स0अ0 ने इस नसीहत में उनको हिकमत की एक बात बताई जिसका समझना एक दावत देने वाले के लिये बहुत ज़रूरी है। इस हदीस में आप स0अ0 से दावत की हिकमत का यह तरीक़ा मालूम होता है कि आदमी जब भी कहीं दावत की बात कहे तो उसमें तदरीज व तरतीब अख़्तियार करे। सारी बातें एक साथ पेश न की जाएं। इसकी वजह यह है कि जो नामानूस बातें होती हैं उनका फ़ौरन कुबूल करना मुश्किल होता है, लेकिन जब आदमी मानूस होता है तो उसका कुबूल करना आसान हो जाता है। इसलिए तमाम दावत का काम करने वालों के लिये यह उसूली बात है। चाहे कोई शख़्स मुश्रिकीन में काम करे, अहले किताब में काम करे, या मुसलमानों में काम करे। जो लोग इस्लाह व दावत का काम करते हैं, उन सबके लिये इस हदीस में यह हिकमत है कि दावत के काम में तदरीज अख़्तियार की जाये। सारा बोझ एकसाथ न डाला जाये। अगर सारा बोझ एकसाथ डाल दिया जायेगा तो इसका नतीजा यह होगा कि फिर आदमी उसके बारे में सोचेगा कि आदमी यह सोचेगा कि यह हम कर भी सकेंगे या नहीं? वह सोचेगा कि इतनी बातों पर अमल करना मुश्किल है, लेकिन जब एक बार आदमी मानूस हो जाएगा और एक चीज़ को अच्छी तरह समझ लेगा तो दूसरी बात उसको कुबूल करने में सहूलत होगी। मालूम हुआ कि दावती काम में तदरीज अख़्तियार करने की ज़रूरत है और यह ख़्याल रखने की ज़रूरत है कि एक–एक बात कही जाये, जब मुख़ातिब एक बात से मानूस हो जाए, फिर दूसरी बात कही जाए।

दावत का दूसरा चरण: ऊपर दी गयी हदीस से यह भी मालूम होता है कि दावती काम में तदरीज के साथ तरतीब भी अख़्तियार की जाए, जो चीज़ें ज़्यादा

ज़रूरी हैं और ज़्यादा अहम हैं, उनको पहले चरण में बयान करें, जो चीज़ें कम अहम हैं उनको उसी तरतीब से दर्जा ब दर्जा बयान किया जाए। ऐसा न हो कि ग़ैर अहम का पहले तज़किरा हो और अहम चीज़ों का बाद में तज़किरा हो। कोई किसी शिर्क वाले के पास जाए और बजाए तौहीद की दावत देने के उसको पहले नमाज़ या आमाल की दावत दे तो यह तरतीब नामुनासिब है, इसलिए कि आमाल की बुनियाद अक़ाएद पर है और अक़ाएद की बुनियाद तौहीद पर है। लिहाज़ा सबसे पहला मरहला तौहीद का है। इस हदीस में एक तरफ़ आप स0अ0 ने तदरीज बयान फ़रमायी है और दूसरी तरफ़ तरतीब भी बयान फ़रमायी है कि जो सबसे अहम चीज़ हो उसको सबसे पहले बयान किया जाये और ज़ाहिर है कि अहम वह चीज़ है जो बाद में आने वाली चीज़ की बुनियाद है। हदीस से मालूम होता है कि सबसे अहम चीज़ तौहीद है। तौहीद का अक़ीदा सही है तो बाक़ी तमाम चीज़ें सही होंगी। इसलिए यह दोनों चीज़े ज़रूरी हैं तदरीज भी ज़रूरी है, तरतीब भी ज़रूरी है। इसका फ़ायदा यह होता है कि आदमी उसको क़ुबूल करता है, उस पर अमल करना उसको आसान होता है। वरना जो चीज़ें अजनबी हों, जिनसे आदमी मानूस न हो, अगर वे सब इकट्ठा कहीं जाएं तो आदमी उनको बोझ महसूस करता है। क़ुरआन मजीद की दावत का तरीक़ा इसीलिए यह है कि जो एहकामात पेश किये जाते हैं, अव्वत तो वे निरे एहकामात नहीं होते, बल्कि उसके साथ–साथ इसमें जो इसका तरग़ीबी पहलू है, वह भी ज़िक्र किया जाता है। गोया जो दवा दी जाती है, वह शकर में लपेट कर दी जाती है, अन्दर से कड़वी है लेकिन ऊपर से मीठी है ताकि उसका लेना आसान हो, अगर कड़वी दवा निरी कड़वी होगी तो उसका हलक़ से नीचे उतारना दुश्वार होता है, इसलिए पहले यह कोशिश की जाए कि जो बात भी कही जाए तदरीज के साथ कही जाए, दूसरे यह कि उसके में तरतीब का लिहाज़ रहे।

दावत का तीसरा चरणः तदरीज व तरतीब के साथ एक और अहम बात है जो हमें क़ुरआन मजीद से मालूम होती है, उसका ख़ास लिहाज़ रखा जाए, वह यह कि जो बात कही जाए, बेहतर तरीक़े पर कही जाए। अल्लाह का इरशाद हैः

"अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के ज़रिये बुलाते रहिये और अच्छे तरीक़े पर उनसे बहस कीजिए।" (सूरह नहलः 125)

साफ़–साफ़ क़ुरआन मजीद में कह दिया गया कि दावत के तरीक़े में नर्मी अख़्तियार की जाए। अगर दायी एक बात कहेगा और उसमें कुछ सख़्ती अख़्तियार करेगा तो उसका असर नहीं होगा लेकिन वही बात अगर नर्मी व अपनाइयत से कहेगा तो बात मुअस्सिर होगी। इसलिए कि आदमी का मिज़ाज यह है कि वह सख़्ती और बड़ाई को पसंद नहीं करता। अगर बात का कहने वाला ज़रा भी यह ज़ाहिर करे कि वह ऊपर और सामने वाला नीचे, तो बात मुअस्सिर नहीं होती। इसलिए दायी यह कभी न समझे कि हमारे पास इल्म है और जिससे हम कह रहे हैं वह बेइल्म है, जाहिल है, यह हमसे नीचा है, हमतो इससे हर तरह ख़िताब कर सकते हैं, वह हमसे छोटा है, अगर यह बात ज़हन में आती है तो अव्वल तो उसूल के ख़िलाफ़ बात है, हर आदमी को समझना चाहिये कि हममें कितनी कोताहियां हैं, और दूसरे यह कि दावत का अमल फिर ग़ैरमुअस्सिर हो जाता है। उसकी तासीर के लिये ज़रूरी है कि आदमी अपने को कम समझे, मुख़ातिब की अहमियत ज़हन में हो, और यह समझे कि जब मुख़ातिब से मुहब्बत के साथ कहा जाएगा, अपनाइयत से कहा जाएगा, तो इसका असर पड़ेगा और अगर उसमें अपनाइयत नहीं है तो फिर बात मुअस्सिर नहीं होगी, दावत का काम चाहे आप अपनो में करें या ग़ैरों में हर मैदान में यही सूरते हाल है, हर जगह का यह बुनियादी उसूल है कि तदरीज व तरतीब हो।

अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुनकरः तीसरी बात जो क़ुरआन मजीद और आप स0अ0 की सीरत–ए–तैय्यबा से मालूम होती है, वह है बुराई पर

रोक लगाना। सीरते नबवी के वाक़्यात देखो तो अंदाज़ा होगा कि किस तरह आप स0अ0 इनकारे मुनकिर फ़रमाते थे। यह भी लाज़िम है। अगर कोई यह समझे कि इनकारे मुनकिर न किया जाए तो ज़ाहिर है कि दीन नाक़िस हो जाएगा, इसलिए कुरआन मजीद में दोनों बातें हैं:

"अच्छाई का हुक्म दो और बुराई से रोको।"

का भी ज़िक्र मिलेगा। आप स0अ0 की सीरते तैय्यबा में इसका पूरा नमूना मिलेगा। लेकिन अच्छाई का हुक्म किस तरह दिया जाए और बुराई पर किस तरह रोका जाए, यह बातें हमें सीरत से मालूम होती हैं। सीरत में जो वाक़्यात सामने आते हैं, उनमें आम तौर पर ऐसा नहीं होता कि आप स0अ0 कहीं हुक्म देते हों, बल्कि आप स0अ0 उस काम की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते थे कि फ़लां काम बड़ा मुफ़ीद है, बड़ा मुनासिब है। इसके यह फ़ज़ाएल व फ़वाएद हैं ताकि आदमी के अन्दर खुद दिलचस्पी व रग़बत पैदा हो जाए।

दावत का मुअस्सिर तरीक़ा: मालूम हुआ कि दावत का मुनासिब तरीक़ा हर जगह मलहूज़ रखना ज़रूरी है। आदमी दूसरे की नफ़सियात समझे और उसके एतबार से उसको ख़िताब करे। वह जज़्बात मजरूह न करे बल्कि वह अपनाइयत से मुख़ातिब करे कि वह दायी को अपना समझे, जब आदमी एक बार अपना समझता है तो उसके बाद बात बड़ी आसान हो जाती है।

हज़रत मौलाना अली मियां रह0 फ़रमाते थे कि जब भी तुम किसी से बात करना चाहो तो खुले दरवाज़े से जाओ, कभी किसी बन्द दरवाज़े को ज़बरदस्ती खोलने या तोड़ने और ज़बरदस्ती खुलवाने की कोशिश न करो, इसलिए कि जब तुम खुले दरवाज़े से जाओगे, तुम्हारे अन्दर अपनाइयत पैदा हो जाएगी, तुम जिस समाज में जाओगे वह तुमको अपना समझेगा, और जब अपना समझेगा तो तुम जो बात भी कहोगे तुम्हारी बात तवज्जो से कान लगाकर सुनी जाएगी कि अपना आदमी कह रहा है और जहां अजनबियत का एहसास हो तो बात मुअस्सिर नहीं होगी।

शेष: रसूल-ए-इन्सानियत

आज मुसलमानों में एक बड़ा तबक़ा वह है जो रसूले पाक (स0अ0) की सुन्नतों को बिना किसी ख़ौफ़ व ख़तरे पामाल कर रहा है। और अपने तर्ज़े अमल से आप (स0अ0) को ऐसी तकलीफ़ पहुंचा रहा है कि अगर आप (स0अ0) तशरीफ़ ले आएं तो उस मुसलमान तबक़े की तरफ़ नज़र फ़रमाने से इनकार कर दें कि यह इतने नालायक़ लोग हैं कि हमारी सुन्नतों को पामाल करते हैं। हमारी नमाज़ों को छोड़ते हैं, जिसमें हमारी आंखों की ठन्डक है। हमारे कितने आमाल हैं जिनको हम पसंद करते हैं। और यह लोग उससे आराज़ करते हैं। और वह सारे काम करते हैं जिनसे हमने रोका है।

आप (स0अ0) की आदत यह भी थी कि अगर कोई आपको बुरा कहता था तो आप उसको बर्दाश्त करते थे। उसके साथ अच्छा मामला करते थे । यहां तक कि कोई यहूदी शख़्स बीमार होता तो उसकी अयादत के लिये तशरीफ़ ले जाते। इसी तरह जो आप (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाता उसकी भी मिज़ाज़ पुर्सी फ़रमाते थे, लेकिन इस वक़्त अक्सर मुसलमानों का यह हाल है कि उन्होंने यह सुन्नत बिल्कुल छोड़ी हुई है बल्कि ज़िन्दगी में पेश आने वाले इन तमाम मवाक़े पर सुन्नते नबवी (स0अ0) से कोई रिश्ता नहीं समझा है जबकि आप (स0अ0) ने ज़िन्दगी के हर गोशे में मुकम्मल रहनुमाई फ़रमायी है। इसलिए अहले सुन्नत के ज़मरा में शुमार होने वाले तमाम अफ़राद की यह अव्वलीन ज़िम्मेदारी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की सुन्नतों को न छोड़े। आपकी सुन्नतों को हम अपने हाथों में मज़बूती से थाम लें और आप (स0अ0) का मुबारक इरशाद है कि जो फ़साद के मौक़े पर मेरी सुन्नत को थामेगा उसके लिये 100 शहीदों का अज्र है। यह कोई मामूली बात नहीं है। मौजूदा हालात में इसपर बहुत ग़ौर की ज़रूरत है। इसलिए कि रसूल (स0अ0) की सुन्नतों को पामाल करना आज मुसलमानों का शेवा बन गया है। हम लाइल्मी और बेतवज्जिही के नतीजे में बहुत से ऐसे काम कर जाते हैं जिसका सुन्नत से कोई वास्ता नहीं है।

मुसाफ़िर की नमाज़

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

सफ़र की हालत में शरीअत ने नमाज़, रोज़े में कुछ सुहूलियात दी हैं। वजह बिल्कुल वाज़ेह है कि सफ़र में इन्सान मशक्क़त में होता है इसलिए अगर छूट न दी जाए तो उससे मशक़्क़त हो सकती है। नमाज़ के बारे में यह सहूलत दी गयी कि चार रकआत वाली नमाज़ को दो रकआत कर देने का हुक्म दिया गया। अल्लाहत आला का इरशाद है: "और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो इस बात में तुम पर कोई हर्ज नही है कि नमाज़ में क़स्र कर लिया करो।" (सूरह निसाः 101)

इस आयते करीमासे ऐसा महसूस होता है कि इन्सान को अख़्तियार रहता है कि चाहे क़स्र करे या चाहे तो क़स्र न करे लेकिन बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि क़स्र करना ज़रूरी है। इसीलिए हज़रत उमर रज़ि0 से मरवी है नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः "अल्लाहत आला का तुम पर एक सदक़ा है, लिहाज़ा अल्लाह के सदक़े को कुबूल करो।" (मुस्लिम)

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ि0 की रिवायत है फ़रमाती हैं कि नमाज़ दो रकआत फ़र्ज़ की गयी फिर आंहज़रत स0अ0 ने हिजरत की तो चार रकआत फ़र्ज़ कर दी गयी और सफ़र की नमाज़ को पहले फ़रीज़े पर बाक़ी रखा गया है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इन जैसी अहादीसों की वजह से अहनाफ़ के नज़दीक क़स्र करना ज़रूरी होता है। (हिन्दिया, शामी)

कितनी दूरी के सफ़र से क़स्र किया जा सकता है?

लुग्वी एतबार से मुसाफ़त तय करने को सफ़र कहते हैं चाहे वह मुसाफ़त कम हो या ज़्यादा हो लेकिन उर्फ़ और इस्तिलाह दोनों में मामूली मुसाफ़त तय करने को सफ़र नहीं कहा जाता, इसीलिए उर्फ़ में लम्बी मुसाफ़त पर जाना हो तभी उसको सफ़र कहा जाता है और शरीअत की इस्तलाह में जिस ख़ास सफ़र से एहकाम में तब्दीली आ जाती है उस बारे में अइम्मा का इख़्तिलाफ़ है। अहनाफ़ के यहां उसकी तक़रीर असनल मुसाफ़त से नहीं है बल्कि असलन मुसाफ़िर वह है जो इतनी दूर की मुसाफ़त के निकला हो जिसको साल के छोटे दिनों में ऊंट पर सवारी करके या पैदल तीन दिन और तीन रात में तय किया जा सकता हो और यहां मुसलसल चलना मुराद नहीं है बल्कि पहले ज़माने में जिस तरह आराम का ख़्याल रखते हुए सफ़र तय करते थे वह मुराद है। और उस ज़माने में उर्फ़ सुबह से ज़वाल तक सफ़र करने का था। इस तरह दिन में सात घंटों से कुछ कम चलने का रिवाज था। ज़ाहिर बात है कि अगर तरह से मैदानी इलाक़ों में सफ़र किया जाए तो ज़्यादा मुसाफ़त तय हो जाएगी और पहाड़ी इलाक़ों में कम मुसाफ़त तय होगी। बहरी रास्तों का निज़ाम इन दोनों से अलग होगा। (हिन्दिया, शामी)

अहनाफ़ ने तीन दिन तीन रात का क़ौल मुस्लिम शरीफ़ की इस रिवायत से मुस्तनबत किया है जिसमें आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया कि ख़फ़ीन पर मुक़ीम एक दिन एक रात और मुसाफ़िर तीन दिन तीन रात मसह करेगा तो एहनाफ़ फ़रमाते है कि मुसाफ़िर की मुद्दते मसह तीन दिन–तीन रात मुक़र्रर की गयी है। इससे मालूम हुआ कि कम से कम तीन दिन का सफ़र हो तभी मुसाफ़िर माना जाएगा।

बाद में उलमा ने आसानी के लिये इसको मीलों से मुक़द्दर कर दिया और ज़्यादा मशहूर यह है कि 48 मील मुसाफ़त सफ़र है जिसके तक़रीबन सवा सत्तर किलोमीटर होते हैं। बहुत से उलमा ने इससे ज़्यादा मुसाफ़त तहरीर फ़रमायी है। देखिये (अहसनुल फ़तावा)

अब इस मुसाफ़त को कोई मिनटों में तय करले तब भी उस पर क़स्र लाज़िम होगा। इसी तरह अगरचे क़स्र की हिकमत मशक़्क़त से बचाना है इसके बावजूद जो कस्र हर हालत में लाज़िम होगा ख़्वाह सफ़र में कोई भी

मशक़्क़त न हो रही हो। (हिन्दिया)

क़स्र का हुक्म कब शुरू होगा?

जब मुसाफ़ते सफ़र की मज़कूरा बाला मिक़दार के बराबर सफ़र का इरादा से निकले तो महज़ अपने घर से निकल जाने से क़स्र शुरू नहीं होगा। क़स्र उस वक़्त शुरू होगा जब अपनी बस्ती की आबादी से बाहर निकल जाए। यह हुक्म बड़े शहरों के लिये भी होगा, अलबत्ता अगर दो शहर आस–पास है और दोनों की आबादी में इत्तेसाल हो गया है जैसे देहली और ग़ाज़ियाबाद तो सरकारी एतबार से जहां एक शहर ख़त्म हो रहा है वहां से निकलते ही सफ़र के एहकाम शुरू हो जाएंगे अगरचे आबादी मुत्तसिल हो। (शामी)

जहां तक रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, एयरपोर्ट का ताल्लुक़ है तो उनमें भी यही ज़ाब्ता रहेगा। अगर इन जगहों तक शहर की आबादी मुत्तसिल है तो वहां क़स्र के एहकाम शुरू नहीं होंगे और अगर यह मक़ामात आबादी से बाहर हों, तो कस्र के एहकाम वहां भी रहेंगें। (हिन्दिया)

जब दूरी अलग–अलग हो:

अगर किसी जगह जाने के दो रास्ते हों मसनल रेलवे लाइन भी हो और सड़क भी हो, एक रास्ते से मुसाफ़ते सफ़र पूरी हो जाती है लेकिन दूसरे रास्ते से पूरी नहीं होती तो जिस रास्ते से मुसाफ़त पूरी हो रही है उस से सफ़र करेगा तो क़स्र होगा दूसरे रास्ते से करेगा तो इतमाम होगा। (हिन्दिया, शामी)

क़स्र का हुक्म कब ख़त्म होगा:

फिर जब वह मुसाफ़िर हो गया तो अब बराबर चार रकआत वाली नमाज़ में कस्र करता रहेगा यानि उनको दो रकआत पढ़ेगा, जब तक अपने शहर लौट न आए फिर जब अपने शहर की आबादी में पहुंच जाए तो क़स्र का हुक्म ख़त्म हो जाएगा, ख़्वाह रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन या एयरपोर्ट ही पहुंचा हो, जहां तक शहर की आबादी मुत्तसिल हो गयी है तो इसी तरह अगर किसी गांव या शहर में पंन्द्रह दिन या इससे ज़्यादा ठहरने की नियत कर ली तब भी क़स्र का हुक्म ख़त्म हो जाएगा। लेकिन शर्त यह है कि एक जगह पंद्रह दिन ठहरने की नियत की हो। चुनान्चे अगर आस–पास दो गांव एक जगह के बजाए दोनों जगह मिलाकर पन्द्रह दिन ठहरेगा तो वह क़स्र करता रहेगा। जैसे किसी इलाक़े में जमाअत जाए और नियत यह है कि इसी इलाक़े में पन्द्रह दिन या इससे ज़्यादा काम करने का है लेकिन उनका इरादा एक गांव में ठहरने का नहीं बल्कि अलग–अलग बस्तियों में क़याम रहेगा तो यह सब मुसाफ़िर के हुक्म में रहेंगे, इसके बरख़िलाफ़ जैसे कोई जमाअत देहली और मुम्बई जैसे शहर में जाए पूरा चिल्ला वहीं गुज़ारना तय हो गया हो लेकिन अलग–अलग मोहल्लों और मस्जिदों में चूंकि एक ही शहर में पन्द्रह दिन ठहरना है तो वह मुक़ीम हो जाएंगे। (शामी)

पन्द्रह दिन एक जगह ठहरने में एतबार रात का होता है

चुनान्चा किसी का इरादा यह है कि पन्द्रह दिन या उससे ज़्यादा फ़ला जगह रात गुज़ारनी है और दिन में दूसरे गावं या बस्तियों में फेरी लगाऊंगा तो अगर यह बस्तियां अक़ामत वाले गावं से मुसाुते सफ़र पर नही हैं तो वह मुक़ीम माना जाएगा। (हिन्दिया)

यह भी वाज़ेह रहे कि जब एक साथ पन्द्रह दिन ठहरने की नियत करके तभी क़स्र ख़त्म होता है चुनान्चे अगर कोई एक बस्ती में सालों मुक़ीम रहा लेकिन एक साथ प्रन्द्रह दिन ठहरने की नियत नहीं थी इरादा यह था कि ज़रूरत एक दो दिन में पूरी हो जाएगी तो ज़रूरत पूरी होते ही वापस हो जाउंगा। लेकिन उसकी ज़रूरत पूरी नहीं हुई और वह उसी तरह चंद दिन ठहरने की नियत करते हुए सालों वहां मुक़ीम रहा तो वह शरअन मुसाफ़िर ही है और नमाज़ में क़स्र करता रहेगा। (हिन्दिया)

क़स्र के एहकाम

जब कोई शख़्स शरई तौर पर मुसाफ़िर हो जाए तो उस पर लाज़िम है कि चार रकआत वाली नमाज़ों (ज़ुहर, अस्र, इशा) को दो रकआत पढ़ै, अगर भूले से उनको चार रकआत पढ़ लिया तो अगर दो रकआत के बाद तश्हद के लिये क़ादा किया था तो उसकी नमाज़ कराहियत के साथ हो जाएगी और बाद में दो रकआत न फ़िल हो जाएगी अगर नमाज़ ही में याद आ जाए तो उसको सज्दा सहू कर लेना चाहिए और अगर दो रकआत के बाद क़ादा नहीं किया तो यह नमाज़ फ़र्ज़ के तौर पर नहीं होगी नुलि हो जाएगी। फ़ज़्र नमाज़ उसको अलग से पढ़नी होगी। (शामी).....शेष पेज 14 पर

इस्लाम से डर कैसा?

शमसुल हक़ नदवी

इस्लाम इन्सानी अक़्ल व समझ की पराकाष्ठा का आख़िरी धर्म है और मानवता के स्थायी मार्गदर्शन के लिये आया है। इसीलिये वो सभी धर्मों से व्यापक व सम्पूर्ण भी है। ये सम्पूर्ण मानवता के लिये है। इसके कार्यक्षेत्र से मानव जीवन का कोई कोना और कोई पहलू बाहर नहीं है। वो उसकी सम्पूर्ण दीनी व दुनियावी और आत्मिक व भौतिक आवश्यकताओं का पूरक और जीवन यापन का सम्पूर्ण नियामक है। इसमें दीनी व दुनियावी और शरीर व आत्मा का भेद नहीं बल्कि दुनिया में अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने का ही नाम इस्लाम है। इसमें इतनी वृहद्ता है कि वो हर दौर में नेकी के मानवीय उन्नति का साथ दे सकता है तथा इसमें इसका मार्गदर्शन कर सकता है। अतः दिल की गहराइयों से इस पर ईमान रखने वालों को जब भी राज–काज की बाग़डोर सौंपी जायेगी ये हमारा दुखी संसार जन्नत का नमूना बन जायेगा। कुरआन करीम का इरशाद है:

"ये वो लोग हैं कि अगर हम इनको देश की सत्ता दे तो नमाज़ पढ़े और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें।"

ये है इस्लाम प्रियों की इस्लाम प्रियता का सारांश और सम्पूर्ण मानवता के लिये इस्लाम के दीन–ए–रहमत होने का सारांश कि अगर इस्लाम के सच्चे पैरोकारों को शासन व अधिपत्य प्राप्त हो जाये तो दुनिया में शासन व राजनीति के ख़ाक़े अल्लाह के इस छोटे से कथन के प्रकाश में बनेंगे। समाज से लेकर सत्ता व अर्थव्यवस्था, व्यापार, पर्यटन, न्यायपालिका के क़ानूनों और फ़ौजदारी के नियमों, विभिन्न जातियों व बिरादरियों के साथ न्याय और सबके अधिकारों की सुरक्षा यहां तक कि साहित्य, कला व फ़नकारी सबके सब इस के बनाये हुए ख़ाक़े के अनुसार चलेंगे।

इस सृष्टि की रचना करने और इसको चलाने वाले सृष्टा की उपासना और उसके सामने सर झुकाने और उसके आदेशों का पालन करने के साथ–साथ इस्लामिक विचारों वाली सत्ता कुछ इस तरह प्रशिक्षित होगी कि बैतुलमाल की स्थापना के बाद कोई नंगा, भूखा न रहने पायेगा। अदालतों के न्याय बिकने के बजाये मिलने लगेगा। रिश्वत, चालबाज़ी, झूठी गवाहियों और क़स्मों का ख़ात्मा हो जायेगा। अमीर को ग़रीब को ज़लील समझने और उसका हक़ मारने और सताने का कोई हक़ और कोई मौक़ा का बाक़ी न रह जायेगा। चोरियां और बदकारियां, डाके और क़त्ल व लूटपाट का ख़ात्मा हो जायेगा। एक कमज़ोर आदमी रात के अंधेरे या सेहरा या वीराने में सोने या रूपये पैसे को गट्ठर लेकर चलेगा और किसी को आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं होगी। ग़रीबों का ख़ून चूस कर तैयार होने वाली महाजनी कोठियों और सूदख़ोर साहूकारों और बैंकों के टाट उलट जायेंगे। शराबी और जुआड़ी अगर अपनी हरकत न छोड़े तो तड़ीपार कर दिये जायेंगे। सिनेमा और थियेटर जो बेहयाई और अश्लीलता का खेल दिखा–दिखाकर समाज की आंखों से लाज–लज्जा को ख़त्म करके बदकारी का तूफ़ान उठाते हैं, उनकी सभी तमाशागाहों को तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा।

अश्लील साहित्यों, चारित्रिक गिरावट के अफ़सानों और बेहया शायरी की जगह पाकीज़ा और तामीरी साहित्य लेंगे। शहर व देहात, कूचा व बाज़ार हर जगह

इन्सानी शराफ़त और प्यार व मुहब्बत की शहनाइयां बजती सुनाई देंगी।

मानवीय जीवन यापन के नियम किसी विशेष क़ौम व किसी विशेष युग के रस्म व रिवाज पर स्थापित नहीं हैं। बल्कि उसमें इस विचार व सोच की पूरी छूट रखी गयी है जिस पर इन्सान पैदा किया गया है। जब मानव प्रकृति हर युग में स्थापित है तो प्राकृतिक दीन के आदेशों व नियमों को भी स्थापित करना आवश्यक है अन्यथा मानव समाज में ऐसे–ऐसे बदलाव होंगे जो उसको जानवरों से भी बदतर बना देंगे और फिर उसको इन्सान बनने से वहशत होगी।

कुछ अर्से पहले की बात है कि लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में ऐसे लड़के को ईलाज द्वारा मानव प्रकृति पर लाने का प्रयास किया जा रहा था जिसको बचपन में भेड़िया उठा ले गया था मगर ख़ुदा की कुदरत की भेड़िये ने उस बच्चे को खाया नहीं बल्कि उसकी मादा जो बच्चे दिये हुए थी अपने बच्चों के साथ उसको भी पालती रही। उस माहौल में उस बच्चे के चलने का अन्दाज़, खाना व बोलना सब बदल गया। उसको इन्सानों से वहशत होती थी। उसको देखने के लिये एक भीड़ लगी रहती थी। लोग उस पर ख़र्च करने के लिये रुपये भी देते थे लेकिन चूंकि माहौल उसकी प्रकृति पर हावी हो गया था, वो भयभीत रहता था। अन्ततः उसकी मृत्यु हो गयी। ये 1958 या 1959 ई0 का वाक़्या था। स्वयं लेखक ने भी उस लड़के को देखा था।

ये तो सब जानते हैं कि एक शरीफ़ घराने का बच्चा जब चोरों और उचक्कों के माहौल में रहने लगता है तो उसको अपने घर के गंभीर व प्रतिष्ठित वातावरण से घबराहट होने लगती है।

हमारी आज की दुनिया की स्थिति कुछ इसी प्रकार की है। पश्चिमी विचारों व संस्कृति ने इसकी भौतिकता व शहवत रानी की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को ऐसे सांचे में ढाल दिया है कि इन्सान अपनी प्रकृति कसे बहुत दूर निकल चुका है। फ़ितरत से दूर निल जाने के बाद उसने हवसरानी और मनमानी ज़िन्दगी की ऐसी दुनिया बनायी है कि फ़ितरत की तरफ़ लौटने में उसको डर लग रहा है। इसलिये तमाम क़ौमें और लोग जो इस नयी और आवारा सभ्यता के छलावे में फंस चुका है। इनको इस्लाम और इस्लाम प्रियो से वहशत होती है। वो इस डर से कि कहीं इस साफ़–सुथरे और मानवीय प्रकृति के प्रवक्ता व पवित्र जीवन व्यवस्था का चलन न हो जाये, भयभीत रहते हैं और इससे बचने के लिये उसको इन नामों से याद करते हैं जिन से लोगों को इस इस्लाम से इस तरह भयभीत करें जैसे सांप, बिच्छू और ज़हरीले जानवरों और जरासीम से डराया और भयभीत किया जाता है। अतः पत्रकारिता और मीडिया की पूरी ताक़त इसके ख़िलाफ़ लगी हुई है। कोई बात कितनी ही ग़लत हो लेकिन जब बार–बार इसे दोहराया जाये, तरह–तरह के विषयों से उसकी अच्छाइयां बतायीं जायें तो वो बुरी और सौ प्रतिशत ग़लत बातें भी सच और सही लगने लगती हैं।

इस समय इस्लाम और मुसलमानों के बारे में पश्चिमी क़ौमों और उसके अज़ली दुश्मनों यहूद व नसारा ने यही अन्दाज़ अपना रखा है और इसके असर से पूरब की लज्जावान क़ौमें भी इसका साथ देने लगीं। इसलिये कि इस्लाम आयेगा और इस्लाम प्रियों को दुनिया की व्यवस्था चलाने का अवसर प्राप्त होगा तो हया व शर्म से खाली व धन व भौतिकता के उन भूखों जो कमज़ोरो की इज़्ज़तों से खिलवाड़ करते हैं और उनका ख़ून चूस–चूस कर रंग रलियां मनाते है। उन सबका ख़ात्मा हो जायेगा। ये है इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों से डर का कारण जिसकी वजह से इसके विरोध में शोर व हल्ला मचा हुआ है और उसमें वो नाम के मुसलमान भी शामिल हो जाते हैं जिन्होंने पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से अपनी सच्ची प्रकृति पर गर्दा डाल दिया है और जब वो पश्चिमी सभ्यता की ऐनक से इस्लाम को देखते हैं तो उनको इसमें तंगी नज़र आती है। वो घुटन व चुभन महसूस करते हैं। इसलिये वो भी वही बोली बोलने लगते हैं जो उनका पश्चिमी गुरू बोलता है।

ये इस्लाम के लिये कोई नयी बात नहीं। पूरे मानव इतिहास और सारे नबियों की सीरतें इसकी गवाह हैं कि हर युग में इस्लाम का विरोध हुआ है। इस पर तानो के तीरों की बौछार हुई है। लेकिन दीन–ए–हक़ का चिराग़ तमाम तूफ़ानों से गुज़र कर ज़िन्दा रहा है और विरोध पर उतारू क़ौमें तबाह व बर्बाद हुई हैं।

जब आख़िरी रसूल आये तो उनको भी विरोध का सामना करना पड़ा और बेगानों से ज़्यादा अपनो ने सताया मारा और हंसी–मज़ाक़ उड़ाया। मगर फिर दुनिया ने क्या देखा घमन्ड के मतवाले किस तरह मिटते या इस्लाम में आते चले गये। जिस बादशाह ने आप स0अ0 क ख़त को फ़ाड़ा उसके शासन के चीथड़े उड़ गये। आज जब आप स0अ0 को दुनिया से गये हुए चौदह सौ साल हो चुके हैं जो हर पढ़े–लिखे इन्सान की फ़ितरत में है।

इस्लाम ने इन सारे तूफ़ानों से गुज़र कर आज भी वैसे ही जिन्दा और इन्सानियत को नजात दिलाने वाला है जैसे पहले दिन था। उस समय भी जो तूफ़ान इस्लाम के ख़िलाफ़ बरपा है वो तूफ़ान भी चलता रहेगा लेकिन इस्लाम पर आंच न आने पायेगी, मिटेंगे वही जो इस्लाम को मिटाना चाहेंगे जैसा कि होता रहा है। और मिटती हुई क़ौमों का इतिहास इसका गवाह है। विरोधियों और इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशों के इस तूफ़ान में ईमानवालों का इम्तिहान है कि वो इस पर जमे रहें और विरोधियों से घबराकर हिम्मत न हारें। ख़ैर उम्मत होने की उन पर जो ज़िम्मेदारी है किसी जज़बातियत का शिकार हुए बग़ैर इसको हिम्मत व हौसले के साथ और उन आदाब के साथ जो कुरआन करीम और रसूल स0अ0 ने उनको बताये हैं अदा करते रहें। विरोध के ये बादल उठते छटते रहे हैं। ये भी छट जायेंगे और खुदाई मदद आयेगी जैसे इस्लाम की चौदह सौ साला इतिहास में आता रहेगा मगर ये नहीं कहा जा सकता कि कब आयेगी और कितने इम्तिहानों के बाद आयेगी। बस इतना ही कहा जा सकता है कि: "अल्लाह ही के लिये है ज़मीन व आसमान का लश्कर।"

शेष: मुसाफ़िर की नमाज़

मुसाफ़िर की इक़्तिदा में मुक़ीम की नमाज़

मुक़ीम के लिये मुसाफ़िर की इक्तिदा करना जायज़ है चाहे अदा नमाज़ पढ़ी जा रही हो या कज़ा। फिर जब मुसाफ़िर इमाम सलाम फेर दे तो मुक़ीम अपनी नमाज़ पूरी कर लेगा और जब नमाज़ पूरी करने के लिये खड़ा होगा तो वह क़िरआत नहीं करेगा इसलिए कि हुकमन वह अभी इमाम के पीछे ही नमाज़ पढ़ रहा है और मुसाफ़िर इमाम के लिये मुस्तहब यह है कि अपनी नमाज़ मुकम्मल करने के बाद कहे कि आप लोग पअनी नमाज़ पूरी कर लें इसलिए कि मैं मुसाफ़िर हूं। अबू दाउद में हज़रत इमरान बिन हुसैन की रिवायत में है कि आंहज़रत स0अ0 ने मुसाफ़िर की हैसियत से जब नमाज़ पढ़ाई थी तो नमाज़ के इसी तरह ऐलान किया था। (शामी)

मुक़ीम की इक़्तिदा में मुसाफ़िर की नमाज़

अगर मुक़ीम शख़्स वक़्त के अद्यन्रद चार रकआत वाली नमाज़ पढ़ा रहा था तो मुसाफ़िर उसकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ सकता है। इक़्तिदा करते ही उस पर चार रकआत फ़र्ज़ हो जाएगी। अब ख़्वाह उसको इमाम के साथ एक रकआत मिली हो या सिर्फ़ कादा आख़िर ही मिला हो लेकि नअब उस पर चार रकआत पढ़ना फर्ज़ हो जाएगा।लेकिन अगर किसी वजह से इमाम के पीछ पढ़ी जाने वाली उसकी यह नमाज़ फ़ासिद हो जाए और उसको नमाज़ का दोहराना पड़े तो आदा सिर्फ़ दो रकआत कर करेगा। (शामी)

वित्र और सुन्नतों का हुक्म

अगर सफ़र जारी हो तो सुननत मुअक़िदा तो तर्क कर देगा और अगर मुसाफ़िर ही है लेकिन ठहरा हुआ है या अमन व सुकून से है तो अफ़ज़ल यह है कि सुन्नतो पढ़ ले जहां तक वित्र का ताल्लुक़ है तो दोनों हालतों मं उसको पढ़ना वाजिब होगा। बाज़ हज़रात ने सुन्नते फ़ज्र की ज़्यादा फ़ज़ीलत के सबब यह फ़रमाया है कि उसको भी दोनों हालतों में पढ़ा जाएगा। (शामी)

फ़र्ज़ में बदलाव कब होगा

फ़र्ज़ की तब्दीली में आख़िरी वक़्त का एतबासर होता है अगर कोई शख़्स पूरे वक़्त में मुक़ीम रहा और आख़िरी वक़्त में मुसाफ़िर हो गया तो अब यह नमाज़ दो रकआत पढ़ैगा और अगर आख़िरी वक़्त में मुक़ीम हो तो चार रकआत पढेगा। (शामी)

रसूलुल्लाह (स0अ0) का राजनीतिक कौशल

यह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) का लेख कुरैश व यसरिब (मदीना) के मुसलमानों के बीच लिखा गया है इसमें मुसलमानों के साथी और उनके साथ लड़ने वाले भी होंगे और वो लोगों के मुक़ाबले में एक उम्मत होंगे और फिर यह तय किया जाता है जो यहूद हमारे साथ होंगे वो सहायता व सद्व्यवहार के अधिकारी होंगे और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा और न उनके ख़िलाफ़ किसी की मदद की जायहगी और यहूद बनी औफ़, मुसलमानों के साथ एक क़ौम होंगे, यहूद के लियह उनका दीन होगा और मुसलमानों और उनके ग़ुलामों के लियह उनका दीन होगा। यह भी तय है कि संधि करने वाले यहूद भी बनी औफ़ की तरह होंगे।

फ़िर नयमावली में ज़िक्र है कि यहूद व मुसलमान अपना–अपना ख़र्च उठांएगे और नियमावली में आने वाले लोगों की ओर से जंग करेंगे और आपस में नेकी और भलाई का मामला होगा न कि गुनाह का।

और यसरिब का अन्दरूनी हिस्सा नियमावली के अन्तर्गत आने वाले लोगों के लियह हराम है और पड़ोसी अपनी तरह होगा न उसका नुक़सान होगा और न उस पर ज़ुल्म होगा, और बिना आज्ञा किसी एहतराम वाली चीज़ से छेड़छाड़ नहीं की जायहगी और नियमावली के अन्तर्गत आने वाले लोगों में विरोध व झगड़े का फ़ैसला अल्लाह व रसूलुल्लाह (स0अ0) की तरफ़ से होगा। इस नियमावली के द्वारा यसरिब का अस्थायी शासन नबी (स0अ0) को प्राप्त हो गया। संधि के अनुसार आपसी टकराव के समय न्याय करने वाले की आवश्यकता थी जो रसूलुल्लाह (स0अ0) थे। इस प्रकार मानो इस्लामी शासन की नींव रख दी गयी और इस प्रकार रसूलुल्लाह (स0अ0) ने ज़ुल्म व ताक़त परस्ती का ख़ात्मा कर दिया और पूरे अरब में पहली बार उम्मत के हक़ को क़बीले के हक़ पर श्रेष्ठता दी और सीमा निर्माण का उद्गम अल्लाह की शरीअत को बनाया और उसको लागू करना अल्लाह के रसूल (स0अ0) के ज़िम्मे हुआ। जबकि उस समय तक यह अधिकार ताक़तवर क़बीले के पास होता था जो कुसूरवार और बेकुसूरों में कोई फ़र्क़ नहीं करता था।

इस प्रकार यसरिब के शरणार्थियों ने सभ्यता व संस्कृति की नींव सबसे अधिक भयावह व सख़्त क़ौम के बीच रखी और उस साम्राज्य की नींव रखी जो सदियों तक फली–फूली और जो पूरब के गौरान्वित करने वाली और पश्चिम के लियह ईर्ष्या करने वाली बनी रही।

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अपनी सूझ–बूझ से यह समझ लिया था कि आप (स0अ0) जो व्यवस्था पहले मदीना के लिये है और फिर सारी दुनिया के लियह क़ायम करना चाहते हैं, उसकी ज़मानत नियमावली पत्र नहीं दे सकते कि क़ौम के मिज़ाज में सख़्ती, फ़ितना परवरी और पक्षपात है इसलियह दावत की हिमायत और नियमावली की व्यवस्था और नयह देश के नियमों की सुरक्षा के लियह ताक़त की आवश्यकता है और वो ताक़त मोमीनीन के बाज़ुओं में हो सकती है जिन्होंने हब्शा व मदीना की हिजरत की और पुरानी व्यवस्था और जाहिलियत व पक्षपात से विद्रोह किया। इसलियह वही उस आज़ादी व व्यवस्था के हामी हो सकते हैं जिसे पैग़म्बर (स0अ0) लेकर आयह थे। जैश–ए–मुहम्मदी (आप (स0अ0) का बनाया हुआ लश्कर) की पहली फ़ौज मुहाजिरीन व दूसरे अन्सार थे। यह वो रज़ाकार थे जिनके दिल की आवाज़ दावत थी। इस आज़ादी व व्यवस्था का सहारा मुहाजिरीन व अन्सार ही थे। जबकि कुरैश व अन्सार में पुरानी दुश्मनी थी और वो मदीना वालों की आपसी रस्साकशी रसूलुल्लाह (स0अ0) के आने से कुछ पहले क़बीला–ए–औस का ख़ात्मा कर देने के क़रीब थी।

इस तरह मुहाजिरीन व अन्सान की फ़ौज की तैयारी व तरबियत के द्वारा उसे एक मज़बूत ऐका बना देना (जिसका मक़सद दावत की मदद व हिमायत और जिसके द्वारा व्यवस्था व इताअत और जिसकी पूंजी ईमान व यक़ीन हो) वो महान काम था जिसमें रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेनापति की योग्यता प्रकट हुई। मदीने में आने के छः महीने के बाद ही आप (स0अ0) इस सेना का निर्माण करने लगे थे और दो साल बाद आप (स0अ0) ने उसकी सहायता से साज़ोसामान से लैस और अपने सूरमाओं के लियह मशहूर और संख्या में बहुत बड़ी सेना से टक्कर ली और लोगों ने व्यवस्था व प्रशिक्षण का चमत्कार देखा और बदर की पराजय के बाद फिर बुतपरस्ती सर न उठा सकी और वो जैश–ए–मुहम्मदी फ़्रांस और हिन्दुस्तान तक पहुंच गयी।

आप (स0अ0) ने यसरिब में अपने पैरोकारों को भेदभाव का शिकार देखा तो उन्हें भाईचारगी की दावत दी और हर

कुरैश को औस व ख़ज़रज के किसी आदमी का भाई बना दिया और यह लिल्लाही भाईचारा सभी क़बीलों में आम हो गया और यह आस्था की भाईचारगी नस्ब की भाईचारगी से बढ़ गयी और उसी को विरासत भी मिलने लगी।

अबूसुफ़ियान मक्का की विजय के अवसर पर जैश–ए–मुहम्मदी का नज़ारा कर रहे थे जब कोई नयी फ़ौज गुज़रती तो पूछते कि यह कौन हैं?तो उन्हें सुलैम, मुज़ैना और दूसरों के नाम बतायह जाते जिनको वो ज़्यादा महत्व नहीं दे रहे थे। जब सब्ज़ (हरे रंग की) फ़ौज गुज़री तो हज़रत अब्बास (रज़ि0) से पूछा कि यह कौन हैं?तो उन्होंने बताया कि यह मुहाजिरीन व अन्सार हैं इस पर अबूसुफ़ियान कहने लगे कि अबुलफ़ज़ल! इसका तो कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता तुम्हारे भतीजे का साम्राज्य आज बहुत बड़ा हो गया है इस लिल्लाही भाईचारे ने (जिसने क़बीले की रस्मों और जाहिली भेदभाव को समाप्त किया और जिस पर रसूलुल्लाह (स0अ0) ने विशेष ध्यान दिया था) उम्मत–ए–अरबिया को बिखराव से निकाल कर एकता व समानता का जीवन बख़्शा और इस्लामी शासन को ऐतिहासिक स्थान प्रदान किया।

पैग़म्बर मुहम्मद (स0अ0) अत्यधिक गंभीर स्वभाव के, अन्जाम से परिचित, जागरूक और दूरदर्शी थे। उन्होंने भांप लिया कि यसरिब के अमन के लियह मुसलमानों और यहूद व मुश्रिकीन को आज़ादी देने वाला ख़ाली दस्तूर पर्याप्त नहीं हो सकता है और न मुसलमानों में भाईचारा ही मदीना को आन्तरिक सुकून दे सकता है। जब तक कि मदीना समन्दर में एक जज़ीरा की तरह रहे कि वो मुश्रिकीन की आज्ञा व रिआयत की बग़ैर कहीं से संबंध न स्थापित कर सके और वो इस समन्दर में जिसका दीनी नेतृत्व कुरैश के हाथों में है, हिजरत से पहले के मुक़ाबले में ज़्यादा ख़तरे में है। अलावा इसके कि यह कुरैश और अरब इससे सुलह और इसके अस्तित्व को स्वीकार कर लें। हम आगे देखेंगे कि आप (स0अ0) ने इस ख़तरे का इलाज किस तरह किया और ख़तरे में घिरे मदीना को अरब महाद्वीप का केन्द्र और कुछ सालों में इस्लामी साम्राज्य की राजधानी किस प्रकार बना दिया।

आप (स0अ0) मदीने में दोराहे पर थे। एक रास्ता था जिसे कुछ ग़ैर मुस्लिम लेखक और कुछ कोताह नज़र पसन्द करते थे और जो ज़िन्दगी की मुश्किलों और इन्सानी रूकावटों के समय परेशान रह जाते हैं और दूसरा जिस पर अल्लाह ने आप (स0अ0) को चलाया ताकि वो कथनी व करनी में श्रेष्ठ उदाहरण बन सकें। पहला रास्ता नकारात्मक था और दूसरा सकारात्मक व अमली। पहले में तो आप (स0अ0) मदीना में भी मक्के की भांति एक नसीहत करने वाले शुभचिन्तक की हैसियत से रहते और मदीने की संधि करने वालों के सहयोग के भरोसे रहते और कुरैश, मदीना के पास के देहाती का इन्तिज़ार करते कि अगर वो एहसान करके उन्हें एकान्त में छोड़े रहें तो उनका करम हो और अगर उनका ख़ात्मा कर दें तो उन्हें शहादत और उनको गर्व करने का अवसर प्राप्त हो। अमली रास्ता यही था कि आप (स0अ0) इस ख़तरे को भांप लेते और इसे दूर करते और अपनी दावत पर दृढ़ रहकर अपना लक्ष्य प्राप्त करते और अन्सार व मुहाजिरीन की इज़्ज़त व सलामती का बन्दोबस्त करते जो आप (स0अ0) ने किया।

आप (स0अ0) मदीने में कोई ख़ानक़ाह बनाने नहीं आयह थे कि इसके लियह यहूद व मुश्रिकीन की हिमायत मांगते। वो स्वभाव से नकारात्मक और निश्चित रूप से नाकामी के रास्ते पर चलने वाले इन्सान नहीं थे। आप (स0अ0) पर कुछ मदीना वालों ने तो ईमान लाकर मदद की और मुश्रिकीन ने मक्का पर गर्व करने के लियह और उसके व्यापार को मदीना की ओर मोड़ने के लियह उनका साथ दिया और मदीना के यहूद अपने को अल्लाह की महबूब क़ौम और नबूवत के लियह विशेष समझते थे। वो आप (स0अ0) के द्वारा अरबों पर गर्व करना और अपना लाभ प्राप्त करना चाह रहे थे।

मदीना में मुहाजिरीन आते ही यसरिब के बुख़ार में लिप्त हो गया और अपनी औरतों के बांझ होने के शक में पड़ गयह लेकिन जब हज़रत ज़ुबैर (रज़ि0) की बीवी हज़रत असमा (रज़ि0) के यहां पैदाइश हुई तो उन्हें ईद जैसी खुशी हुई और मक्का में उनकी धन–दौलत रह जाने के कारण वो फ़क़ीरी का सामना कर रहे थे। इन सब बातों पर क़ाबू पाने के लियह मेहनत व अमल की आवश्यकता थी और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अपने सही बुद्धि का व कुशल राजनीति का ऐसा सुबूत दिया जो किसी ज़माने में किसी विजयी व सुधारक ने नहीं दिया था।

अब तक संक्षेप में मदीना की हालत, यहूद की उम्मीदों, मुश्रिकीन की संभावनाओं और मुसलमानों की सरगर्मियों का बयान किया गया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास हक़ीक़त पसन्दी और निर्णायक काम के सिवा कोई चारा नहीं था। अब हम मक्का और मदीना के पड़ोसी मुश्रिकीन का निरीक्षण करेंगे ताकि आप (स0अ0) के राजनीति कौशल

और असम्भव व मुहाल स्थिति पर हावी होने का कारनामा सामने आ सके। आम तौर पर यह समझा जाता है कि मक्का एक फ़क़ीर और महरूम कस्बा था जो बंजर भूमि में स्थित था। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि इस्लामी दावत के उदय के समय मक्का मालदार शहरों में से एक था बल्कि पुराने ज़माने का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था और कुरैश के लोग हिम्मत वाले व्यापारी और दूसरी क़ौमों से परिचित लोग थे। शायद उनकी भौगोलिक व स्वाभाविक कमी ही ने उनकी हिम्मत बढ़ाई और उनकी सरगर्मियों में बढ़ोत्तरी की और उन्होंने भ्रमण किया व व्यापार अपनाया। क्या हमने पुराने इतिहास में फ़ेनिक़ियों और नयह इतिहास में बर्तानिया की मुहिम नहीं देखी हैं? इन क़ौमों की कामयाबी का राज़ ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ों से महरूमी थी जिसने उन्हें मुहिम जोई व अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ारों से रोज़ी कमाने पर मजबूर किया और वो बन्जर इलाक़ों में मालदार हो गयह। इसी प्रकार दावत–ए–मुहम्मदिया के उदय के समय उसके लोग ख़ुशहाल और पुरानी दुनिया की पैदावारों से मालामाल थे।

मुस्तशिरक़ (ओरिएन्टलिस्ट) इस्प्रिन्गर लिखता है, "हिजरत के समय मक्का के निर्यात का मूल्य ढाई लाख सोने के दीनार से कम न था। एक दीनार पन्द्रह पौन्ड का होता है यानि मिस्री गिन्नी (मिस्र की करेंसी) का दो तिहाई, अगर उस ज़माने में अच्छी धातु का मूल्य और स्प्रिन्गर की केवल निर्यात की क़ीमत को ध्यान में रखें तो हम मक्का के तबादले के सामानों का अन्दाज़ा कर सकते हैं जो यमन व हब्शा व रोमन व परशियन इम्पायर के बीच व्यापार का संबंध थे और वो व्यापार किसी घराने व किसी जमाअत तक सीमित न था बल्कि आप सीरत की किताबों में देखेंगे जब बदर से पहले अबू सुफ़ियान ने कुरैश के क़ाफ़िले के लियह ख़तरा महसूस किया तो उन्होंने पूरे मक्का को खड़ा कर दिया और एक हज़ार की फ़ौज तैयार हो गयी जिसमें सौ घोड़े और सात सौ ऊंट थे और जब कुरैश को बदर में पराजय हुई तो मक्का वालों ने अबू सुफ़ियान के पूरे काफ़िले को सामान के साथ सदक़ा कर दिया ताकि रसूलुल्लाह (स0अ0) और उनके सहाबा से बदला ले सकें। मक्का के इस वृहद व्यापार का लाभ डेढ़ गुना होता था जिससे वो ऐश करते थे इसके साथ तमाम हाजियों की ज़ियाफ़त भी करते थे और उसे शराब व जुआ, बान्दियों और खेलकूद में भी ख़र्च करते थे।"

इसके विपरीत मदीना में रसूलुल्लाह (स0अ0) और उनके सहाबा की हालत कुछ पिछली बातों से ज़ाहिर है। हिजरत करने वालों के घर और माल मक्का ही में रह गयह थे। मदीना में ईमान के सिवा दुनिया की कोई चीज़ नहीं थी। सहाबी इब्ने उमैर (रज़ि0) के पास तन ढ़ांकने के कपड़े भी न थे। हज़रत अली (रज़ि0) एक यहूदी के बाग़ में काम करते थे जहां एक डोल पानी भरने पर उन्हें एक खजूर मिलती थी जो कुल मुठ्ठी भर होती थी और रसूलुल्लाह (स0अ0) एक बार मस्जिद से निकले तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) व उमर (रज़ि0) को बाहर देखा और उनसे पूछा तुम्हें किस बात ने निकाला?दोनों ने कहा कि भूख ने इस पर आप (स0अ0) ने कहा कि मुझे भी भूख ही ने निकाला है। मक्का छोड़ते समय रसूलुल्लाह (स0अ0) और मक्का वालों की ज़िन्दगियों का फ़र्क़ मालूम है जो दावत के प्रचार और शिर्क से रुकावट का कारण नहीं बन सकता था। कुरैश उनसे मज़ाक़ करते थे और मदीना से गुज़रते हुए अपने व्यापार व हैसियत का प्रदर्शन करते, कमज़ोरों को वर्ग़लाते, और हुबल के नाम पर उनको पकड़ते और लात व उज़्ज़ा के लियह सताते थे।

रसूलुल्लाह (स0अ0) अपनी रिसालत के लियह मुख़लिस और अपने सहाबा के वफ़ादार थे और उनकी हिम्मत व बहादुरी उनको ज़िल्लत में नहीं डाल सकती थी। इसलियह आप (स0अ0) ने वो निर्णायक काम किया जिससे कुरैश के होश ठिकाने लग गयह। आप (स0अ0) ने उनकी सबसे प्यारी चीज़ व्यापार पर हाथ डाला और मदीना के चारों ओर देहाती व मुश्रिकीन व अरबवासियों का घेरा समाप्त किया और यहूदियों के द्वारा पैदा औस व ख़ज़रज और मुस्लिमीन व मुश्रिकीन के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म करके मदीना को अमन का केन्द्र बना दिया।

आप (स0अ0) की तीन ग़रज़ें थीं जिनको समझना आवश्यक था। एक तो ताक़त की प्राप्ति, दूसरे उसकी संस्था, और तीसरे श्रेष्ठ उद्देश्य की पूर्ति के लियह इसका प्रयोग। इस सिलसिले में आप (स0अ0) पूर्व के नबियों से श्रेष्ठ थे। मदीने का निर्माण, मुहाजिरीन व अन्सार का प्रशिक्षण और उनको दुनिया के मुक़ाबले पर खड़ा कर देना नाज़ुक और बड़ा इम्तेहान था जिसमें रसूलुल्लाह (स0अ0) एक सुधारक व एक शासक की हैसियत से प्रकट हुए और इसमें आप (स0अ0) का राजनीति व सैन्य कौशल प्रकट हुआ जो आप (स0अ0) के बुलन्द अख़लाक़ की तरह था।

इत्तेबा-ए-सुन्नत का जज़्बा

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः "हज़रत अरबाज़ बिन सारिया रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने ऊपर मेरे और मेरे खुल्फ़ाए राशिदीन, मेहदीयीन के तरीक़े की पैरवी लाज़िम कर लो। मज़बूती से इसको थाम लो और दांतों से पकड़ लो।" (अबूदाऊदः 4609)

फ़ायदाः "सुन्नत" अरबी ज़बान का शब्द है। इसके माने हैं "तरीक़ा" या "आदत" इस्तेलाह में सुन्नत उन कामों को कहा जाता है जो नबी–ए–अकरम स0अ0 से क़ौलन या अमलन मनकूल हों। आंहज़रत स0अ0 की सच्ची ताबेदारी करने वाला "सुन्नत की इत्तेबा करने वाला" कहलाता है। और आप स0अ0 से मनकूल अक़वाल "मसनून आमाल" कहे जाते हैं।

इन्सानी फ़ितरत में अपने से बड़े से तक़र्रुब का जज़्बा पाया जाता है और यह एक हक़ीक़त है कि अस्ल बड़ाई अल्लाह तबारक व तआला के लिये ही है। इसलिए हर इन्सान की यह तबई ख़्वाहिश होती है कि वह अपने मालिके हक़ीक़ी की रज़ा व तक़र्रुब हासिल करे। इसलिए उसके लिये दुनिया में मुख़्तलिफ़ क़ौमों ने अपने–अपने मिज़ाज के एतबार से तक़र्रुब की राहे अख़्तियार कीं लेकिन कुरब की एक राह वह है जो मालिके हक़ीक़ी ने खुद बतायी है और उसको पसंद भी फ़रमाया है। नीज़ यह ऐलान भी कर दिया कि मेरी कुर्ब व रज़ा का हुसूल इस राह के बग़ैर नामुमकिन है और वह राह है सरवरे कायनाते रसूले इन्सानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 से सच्ची मुहब्बत और उनकी हर नक़ल व हरकत को अपने लिये हर्ज़े जां समझने की कुर्ब्रे इलाही के हुसूल का राज़ बताते हुए एक जगह इरशाद हैः "आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी राह पर चलो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करने लगेगा।" एक दूसरी जगह सराहत से यह बात फ़रमायी गयी कि आंहज़रत स0अ0 के तरीक़े के अलावा तरीक़े की पैरवी दर्दनाक अज़ाब का पेशख़ेमा है। "तो जो लोग भी उनकी (मुहम्मद स0अ0) हुक्म उदूली कर रहे हैं कि वह ख़बरदार रहें कि वे किसी फ़ित्ने में न पड़ जाएं या कहीं दर्दनाक अज़ाब उनाके न आ दबोचे।"

कुरआनी आयत के साथ अहादीसे नबवी स0अ0 में भी इस बात की सराहत है कि फ़लाह व बहबूद का सच्चा वाहिद ज़रिया रसूले इन्सानयत स0अ0 की सच्ची पैरवी है और उनके तरीक़े के मुताबिक़ अपनी हर ख़्वाहिश को कुचलना इन्सानियत का तक़ाज़ा है। मगर इस जज़्बे में हद दर्जा एन्हितात नज़र आये तो यह इस बात का ग़म्माज़ है कि इन्सानियत ज़बोहाली का तेज़तर शिकार हो रही है। नबी करीम स0अ0 ने ऐसी ज़हनियत के उलूम को क़यामत की अलामत में शुमार फ़रमाया है। एक रिवायत में आता है कि आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि एक दौर ऐसा होगा जिसमें इन्सान अपनी मसेहरी से टेक लगाए बेनियाज़ी की कैफ़ियत में मेरे फ़रमान को ठुकरा देगा यानि आंहज़रत स0अ0 के तरीक़े से बेनियाज़ी बरतना एक आम बात होगी और इन्सान रोशन ख़्याली के ज़म में जाहिली ज़िन्दगी बसर करना ही अपनी मेराज समझेगा।

मौजूदा दौर में इन्सानी मआशरा एक अजीब कशमकश का शिकार है। ग़ैरों का तज़किरा किजा खुद मुसलमानां में एक बड़ी तादाद ऐसी है जो आवाज़ा तजदीद के नारे से मुतास्सिर होकर आंहज़रत स0अ0 की तालीमात को फ़रसूदा ख़्यालात पर मुबनी समझ रही हैं और इसका यक़ीन है कि आप स0अ0 की इत्तेबा तरक़्क़ी के बाब में सरे राह है। यही वजह है कि आज इन्सानियत सोज़ तालीमात को छोड़कर दुनिया की पुरफ़रेब रंगीनियों में अमन व सुकून तलाश करने वाले बहुत नज़र आते हैं लेकिन इन्सानियत के पैग़ाम को अपनाने के सिलसिले में उनके अन्दर एक एहसास कोहतगी पायी जाती है। जबकि असहाब ईमान व अज़ीमत की यह शाने इम्तियाज़ी रही है कि उन्हें फ़रोग़े इन्सानियत तालीमात पर अमल करने में कोई हिजाब न होता और उनके हर अमल में इत्तेबा ए सुन्नत का जज़्बा मामूर होता। इसका नतीजा यह था कि उनका मामूली अमल भी समर आवर और कामयाबी की सच्ची तस्वीर होता था। इससे यह समझा जा सकता है कि कामयाबी की शाहे कलीद और रब्बे कायनात से कुर्ब का हक़ीक़ी रास्ता ताक़यामत रसूलुल्लाह स0अ0 की सच्ची ताबेदारी ही में छिपा हुआ है और इन्सानियत की बक़ा उसी से वाबस्ता है।

सोशल मीडिया का इस्तेमाल
कितना लाभकारी – कितना हानिकारक

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

हम जिस समय में जी रहे है वह मीडिया और इन्फ़ारमेशन टेक्नालॉजी का दौर है, जिसे कम्यूनिकेशन ऐज के नाम से भी जाना जाता है। मीडिया ने प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक साधनों के द्वारा तथा सेटेलाइट व इन्टरनेट के माध्यम से ऐसा जाल बिछा दिया है कि पूरी दुनिया घर की गैलरी में सिमट आयी है। इस नई दुनिया को "ग्लोबल विलेज" के नाम से भी जाना जाता है।

हम अभी तक प्रिन्ट मीडिया व इलेक्ट्रानिक मीडिया के नाम से परिचित थे लेकिन इधर कुछ सालों में मीडिया की दुनिया में एक ज़बरदस्त क्रान्ति हुई है जिसके परिणामस्वरूप घर की गैलरी में सिमटी हुई दुनिया और सिकुड़ती हुई हमारे मोबाइल फ़ोन में समा गयी है। इस क्रान्ति रूपी बदलाव को हम "सोशल मीडिया" का नाम देते हैं। आज सोशल मीडिया की प्रसिद्धी प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से कहीं ज़्यादा है। इसके द्वारा न केवल जन साधारण को परस्पर संपर्क में सुविधा हुई है बल्कि ज्ञान व कला तथा तालीम व तफ़रीह के वाफ़र सामान भी मुहैया हुए हैं, उसकी बढ़ती हुई मक़बूलियत व इफ़ादियत को देखते हुए इसे वक़्त की बुनियादी ज़रूरत कहा जा सकता है।

सोशल मीडिया से तात्पर्य इन्टरनेट, ब्लाग्ज़, सामाजिक संपर्क की वेबसाइट, मोबाइल एस.एम.एस. इत्यादि हैं। शिक्षित समाज का लगभग अस्सी प्रतिशत किसी न किसी रूप से सोशल मीडिया से जुड़ा हुआ है तथा साधारणतयः फ़ेसबुक, वाट्सऐप, ट्वीटर, माईऐप्स, गूगल प्लस इत्यादि का प्रयोग करता है। यदि केवल फ़ेसबुक पर मौजूद लोगों को एक देश की आबादी के अनुसार जांचा जाए तो यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। इस एतबार से सोशल मीडिया व्यापारिक, निजी व संस्थानिक विचार–विमर्श का सबसे बेहतरीन साधन है।

जहां एक ओर इसकी प्रसिद्धी बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर इसके सही इस्तेमाल के तरीक़ों से अनभिज्ञता भी आम है। साधारणतयः लोग सोशलमीडिया की किसी भी वेबसाइट पर एकाउन्ट खोलना और हर तरह की अच्छी–बुरी ख़बरों को शेयर करने को ही सबकुछ समझते हैं। और विडम्बना तो यह है कि शिक्षित समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग भी इसी बीमारी का शिकार है, जिसका परिणाम यह होता है कि उसकी सारी मेहनत फेसबुक से शुरू होकर फ़ेसबुक पर ही ख़त्म हो जाती है।

फ़ेसबुक का इस्तेमाल जनसंपर्क, विचार–विमर्श तथा विभिन्न देशों व क्षेत्रों के हाल की जानकारी की हद तक बहुत लाभदायक है। लेकिन इसी सरगर्मी से जुड़ने से पहले ख़बरों के मेयार और उनके प्रोटोकाल को समझना व परखना बहुत ज़रूरी है। केवल भावनात्मक होना कई बार बड़ी परेशानियों का कारण बन जाता है। इसकी एक मशहूर मिसाल महाराष्ट्र में शिव सेना अध्यक्ष बाल ठारके की मौत पर एक कमेन्ट और उस पर एक लाइक है जिसे असहाबे इक़्तिदार ने नामुनासिब समझा और सिर्फ़ दो घन्टे के अन्दर कमेन्ट और लाइक करने वाले पुलिस की गिरफ़्त में थे। इसीलिए सोशल मीडिया पर मुतहर्रिक होने से पहले यह बात ज़हन में ज़रूर रखनी चाहिये कि आप अपनी बातों, तस्वीरों और वीडियो वग़ैरह जो कुछ भी शेयर कर रहे हैं, उसके आप ख़ुद जवाबदेह हैं। दुनिया के क़ानून में भी और आख़िरत के क़ानून में भी।

सोशल मीडिया से जुड़ने से पहले अपने मक़सद का जाएज़ा लेना ज़रूरी है। और मक़सद का नेक व सालेह होना फ़ितरत की सलामती की दलील है। इसके बाद ही आप सोशल मीडिया का इस्तेमाल करें। अर्थात यदि आप जनरल नॉलेज के विषय पर कुछ लिखना चाहते हैं तो विकिपीडिया जैसी साइट पर लिखें, हालात–ए–हाज़िरा या किसी भी मौज़ूअ पर बहस करना चाहते हैं तो उसके लिये फ़ोरम बेहतरीन चीज़ है। अगर आप अपने ख़्यालात, राय व तर्जुबे लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं तो ब्लाग से बेहतर कोई जगह नहीं और अगर इन्टरनेट पर अपने दायरा बढ़ाना चाहते हैं और अपनी व्यस्तता व कार्यक्रम से लोगों को परिचित कराना चाहते हैं तो इसके लिये फ़ेसबुक इत्यादि बेहतरीन हैं।

लोगों को सोशल मीडिया की ठीक से जानकारी न होने का नतीजा है कि फ़ायदा बहुत कम और पैसे व वक़्त की बर्बादी बहुत ज़्यादा है। एक तरफ़ तो फ़ेसबुक से ब्लागिंग का काम लिया जा रहा है तो दूसरी तरफ़ ब्लागिंग को ट्वीटर बना रखा है। अहम मौज़ूआत फ़ेसबुक पर ज़ेरे बहस हैं तो दूसरी तरफ़ उर्दू विकिपीडिया वीरान है। इसके अलावा फ़ोरम को चैट के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है। चुनान्चे

तख़लीक़कार से लेकर फ़नकार तक, शोअरा से लेकर आम इन्सान तक सब अपने क़ीमती वक़्त का सरमाया फ़ेसबुक पर लुटा रहे हैं। वे ग़ौर नहीं करते कि फ़ेसबुक की शोहरत व हौसलाअफ़ज़ाई बहुत ही आरज़ी है। आप फ़ेसबुक, वाट्सऐप या ट्वीटर इत्यादि पर चाहे कितनी ही क़ीमती मालूमात शेयर करें, उसका दो–तीन दिन चर्चा तो ज़रूर होगा, लेकिन बहुत जल्द ह ीवह तज़किरे से ग़ायब हो जाएगी, उसके बिलमुक़ाबिल ब्लाग या फ़ोरम पर लिखा हुआ हमेशा बाक़ी रहता है। यहां तक कि आप लिखना छोड़ भी दे ंतब भी लोग आपकी पुरानी तहरीरों से फ़ायदा उठाते रहेंगे।

यह सोशल मीडिया का सकारात्मक और बाह्य पहलू है। इन पहलुओं को देखते हुए कहा जाता है कि सोशल मीडिया इन्सानी ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा है। इसीलिए आज समाज का हर वर्ग इसे क़ुबूल करने पर मजबूर है। बल्कि इसकी मुख़ालिफ़त को दक़यानूसियत या शिद्दतपसंदी का भी नाम दिया जाता है। लेकिन अगर सिक्के का दूसरा रुख़ देखा जाए तो इन्सानी रिश्तो को कमज़ोर करने, अख़लाक़ी कद्रों की पामाली, इन्सानी सलाहियतों को मफ़लूज और सबसे बढ़कर नवजवान नस्लों को गुमराह करने में सोशल मीडिया का बुनियादी किरदार है। और मुआशरे का हर तबक़ा इसके मनफ़ी असरात की गिरफ़्त में है। यहां तक ि कवे इस्लामी मदरसे जहां सबसे ज़्यादा बेकार की बातों से दूर रहने की तालीम दी जाती है, वहां भी असातज़ा–तलबा का एक बड़ा तब्क़ा सोशल मीडिया के ज़रिये अपनी सलाहियतों को ज़ाया कर रहा है। क्योंकि वह उनके इस्तेमाल के सही तरीक़े से नावाक़िफ़ है।

आप अस्पतालों में चले जाएं, तफ़रीहगाहों के बच्चों या सब्ज़ाज़ारों में बैठे ख़ानदान को देख लें, राहदारों, इधर–उधर आते–जाते लोगों का मुशाहदा कर लें, आपको ज़्यादातर नवजवान मोबाइल थामें इसमें ग़र्क़ नज़र आयेंगे। यहां तक कि अब लाइब्रेरियों और दर्सगाहों में भी तलबा की उमूमी दिलचस्पियां सोशल मीडिया से जुड़ी हुई नज़र आती हैं। इस पर तरफ़ा यह कि वालिदैन व असातज़ा कभी उन नवजवानों की सरगर्मियों का जायज़ा नहीं लेते और न उनकी सोशल सरगर्मियों को जानने की कोशिश करते हैं, उसकी बुनियादी वजह यह है कि वे खुद सोशलमीडिया के मकड़जाल में फसे हुए हैं और उसका जादू उनके सर चढ़ चुका है।

आज बातिल ताक़तें सोशलमीडिया को एक मोअस्सिर हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रही हैं। अब जंगे किसी मैदान पर नहीं बल्कि मीडिया के नेटवर्क पर लड़ी जा रही हैं। सोशलमीडिया ने इन्सानी ज़हनों को पूरी तरह हाइजैक कर लिया है और इन्सानी ज़िन्दगी के हर शोबे को पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में ले लिया है। हम क्या खाएं, क्या न खांए, क्या देखें, क्या न देखें, किससे मुहब्बत करें और किससे नफ़रत करें, क्या पढ़े और क्या न पढ़े, यहां तक कि इन्क़िलाबात को हवा देने और हुकूमतों की हवा उखाड़ने में भी सोशलमीडिया का किरदार बहुत अहम है।

सोशल मीडिया में ग़र्क नई नस्ल के लिये केवल यही एक ख़तरा नहीं है कि वे किसी तश्द्दुद पसंद तन्ज़ीम के हत्थे चढ़ जाएं, और ऐसी कार्यवाहियों में लग जाएं जिसके तमाम रास्ते तबाही की तरफ़ जाते हों, बल्कि एक मुसलमान के लिये यह भी ख़तरा है कि दीन के हवाले से उसे बिल्कुल बेदीन कर दिया जाए और उसे एहसास भी न हो। जज़्बाती नवजवान के ज़हनों में यह तश्द्दुद भर दिया जाए कि वे खुद फ़ैसला करने लगें कि कौन मुसलमान है और कौन काफ़िर हैं। और अपनी अदालतें लगाकर सज़ा देने लगें। अभी तक मामला सिर्फ़ बेहयाई और बेराहरवी तक था लेकिन अब ख़तरे बहुत आगे निकल चुके हैं। अब नवजवानों को प्लानिंग के तहत टारगेट किया जाता है ताकि उनके अन्दर एक पुरतश्द्दुद इन्सान की परवरिश कराके उसे मुआशरे के लिये ख़तरा बना दिया जाए और फिर अपने फ़ायदे हासिल किये जाएं।

अस्ल बात यही है कि सोशल मीडिया जिस क़दर मुफ़ीद है उसके नुक़सान भी उतने ही बड़े और गहरे हैं। उसके ज़रिये जहां दावत व तब्लीग़ और इशाअते इस्लाम की नई–नई राहें खुलती हैं, वहीं थोड़ी सी कोताही और अदमे वाक़फ़ियत के ज़रिये से बड़े मसले पैदा हो जाते हैं। इसीलिए सोशल मीडिया से जुड़े हुए लोगों के लिये ज़रूरी है ि कवे उसके ज़रूरी जाब्तों को बख़ूबी समझ लें। ऐसे लोगों से ख़बरदार रहें जो सोशल मीडिया पर फ़साद, बदअमनी, लड़ाई–झगड़े, बेहयाई या ग़लत ख़बरे फ़ैलाते हैं और कोई भी बात बिना तहक़ीक़ के शेयर न करें। हमेशा समाजी वेबसाइट पर सच्ची व हक़ व सदाक़त पर मुबनी बातें ही शेयर करें और सबसे बुनियादी और ज़रूरी बात यह है कि सोशल मीडिया में ज़रूरत से ज़्यादा इन्हमाक जिस्म व आज़ा के साथ ज़हनी सलाहियतों को भी नुक़सान पहुंचाता है और इन्सानी रिश्तों को भी पामाल करता है।

है दिल के लिये मौत मशीनों की ज़िन्दगी।
एहसास–ए–मुरव्वत कुचल देते हैं आलात।।

दरूद व सलाम

हुज़ूर तक दरूद कैसे पहुंचता है

अल्लाह तआला ने हुज़ूर (स०अ०) तक दरूद पहुंचाने के लिये फ़रिश्ते तय कर रखे हैं, जिसका काम ही यह है कि कहीं भी किसी ने दरूद पढ़ा वह फ़रिश्ते हुज़ूर (स०अ०) की ख़िदमत में पहुंचा देते हैं। हदीसों से साबित है कि जो दरूद शरीफ़ रौज़ा–ए–शरीफ़ पर पढ़ा जाता है, वह ख़ुद हुज़ूर (स०अ०) सुनते हैं। इसलिए कि सारे अम्बिया–ए–किराम ज़िन्दा हैं। फिर हुज़ूर (स०अ०) तो सबसे अफ़ज़ल नबी हैं और ख़ातिमुल अम्बिया (आख़िरी नबी) हैं। आप (स०अ०) तो ज़रूर ज़िन्दा होंगे। बाक़ी वह दरूद जो रौज़ा–ए–शरीफ़ के अलावा दूर–दराज़ के इलाक़ों में लोग पढ़ते हैं, उसको फ़रिश्तें आप (स०अ०) को पेश करते हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि हर दरूद पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है।

दरूद शरीफ़ से शफ़ाअत

शफ़ाअत भी हर मुसलमान के लिये एक बहुत बड़ी नेमत है, जिसको आप (स०अ०) की शफ़ाअत नसीब हो गयी, वह बामुराद हो गया। रसूलुल्लाह (स०अ०) ने इरशाद फ़रमाया है:

''हज़रत अबूदरदा (रज़ि०) से रिवायत है कि जो शख़्स सुबह व शाम दस बार दरूद पढ़ेगा उसको शफ़ाअत नसीब होगी।''

सदक़े की जगह दरूद शरीफ़

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो पैसा न होने की वजह से सदक़ा नहीं कर सकते और वह इस नेमत से महरूम रहते हैं, लेकिन हुज़ूर (स०अ०) ने इसका भी बदल अता फ़रमाया है, आप (स०अ०) फ़रमाते हैं:

''जो शख़्स सदक़ा न कर सके वह मुझपर दरूद पढ़े।''

एक वाक़्या

दरूद शरीफ़ पढ़ने के सवाब और उसके अज्र के बहुत से वाक़्यात किताबों में दर्ज हैं, हम आख़िर में सिर्फ़ एक ही वाक़्या लिखते हैं:

''एक साहब का इन्तिक़ाल हुआ, किसी ने ख़्वाब देखा कि वे शीराज़ की जामा मस्जिद में खड़े हैं, और उन पर एक जोड़ा है और उस पर एक ताज जो जवाहरात और मोतियों से लदा हुआ है, ख़्वाब देखने वाले ने उनसे पूछा। उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी और मेरा बहुत इकराम किया और मुझे ताज अता फ़रमाया, और यह सब नबी करीम (स०अ०) पर कसरत से दरूद की वजह से हुआ है।''

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 11 NOVEMBER 2017 VOLUME: 09

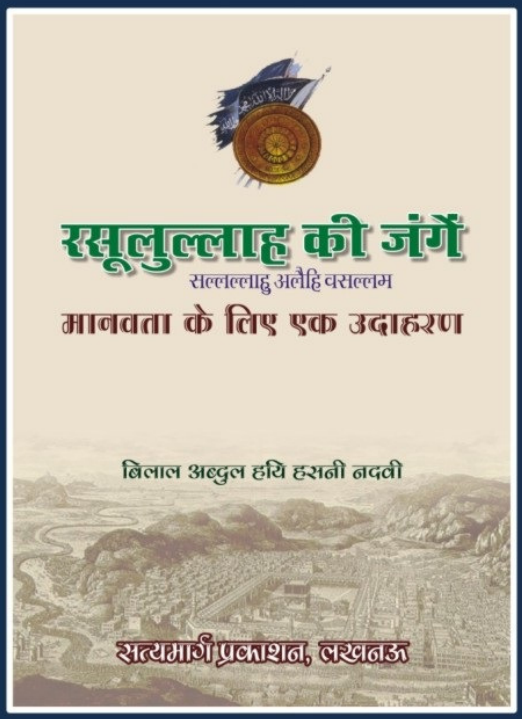

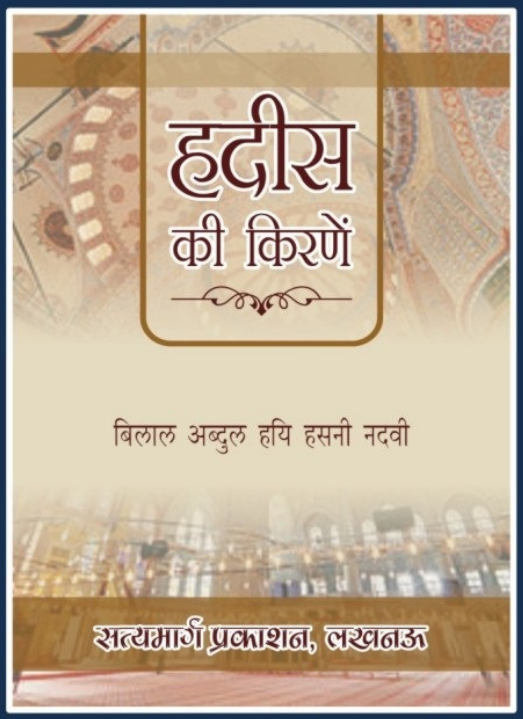

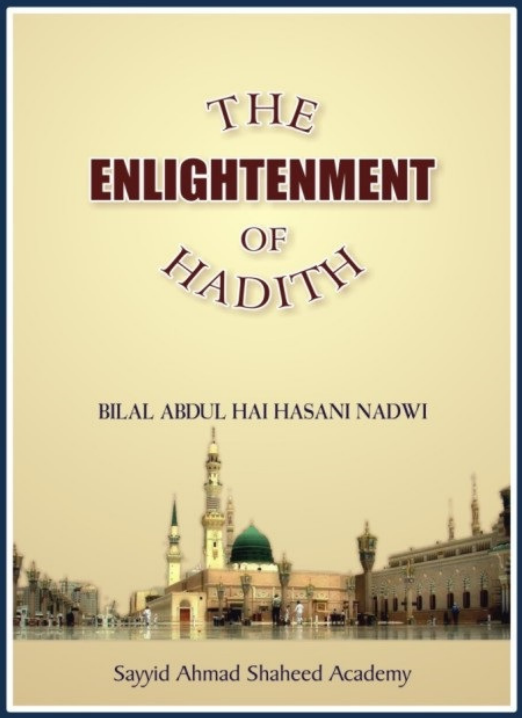

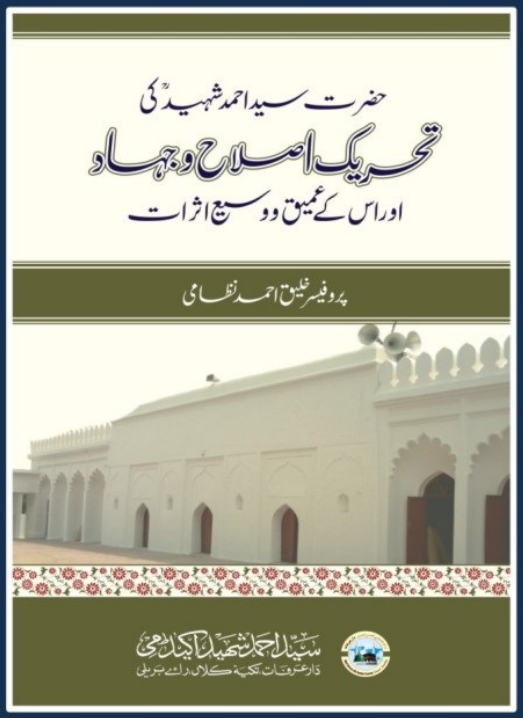

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.